चकमक

अप्रैल, 2003 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 10.00

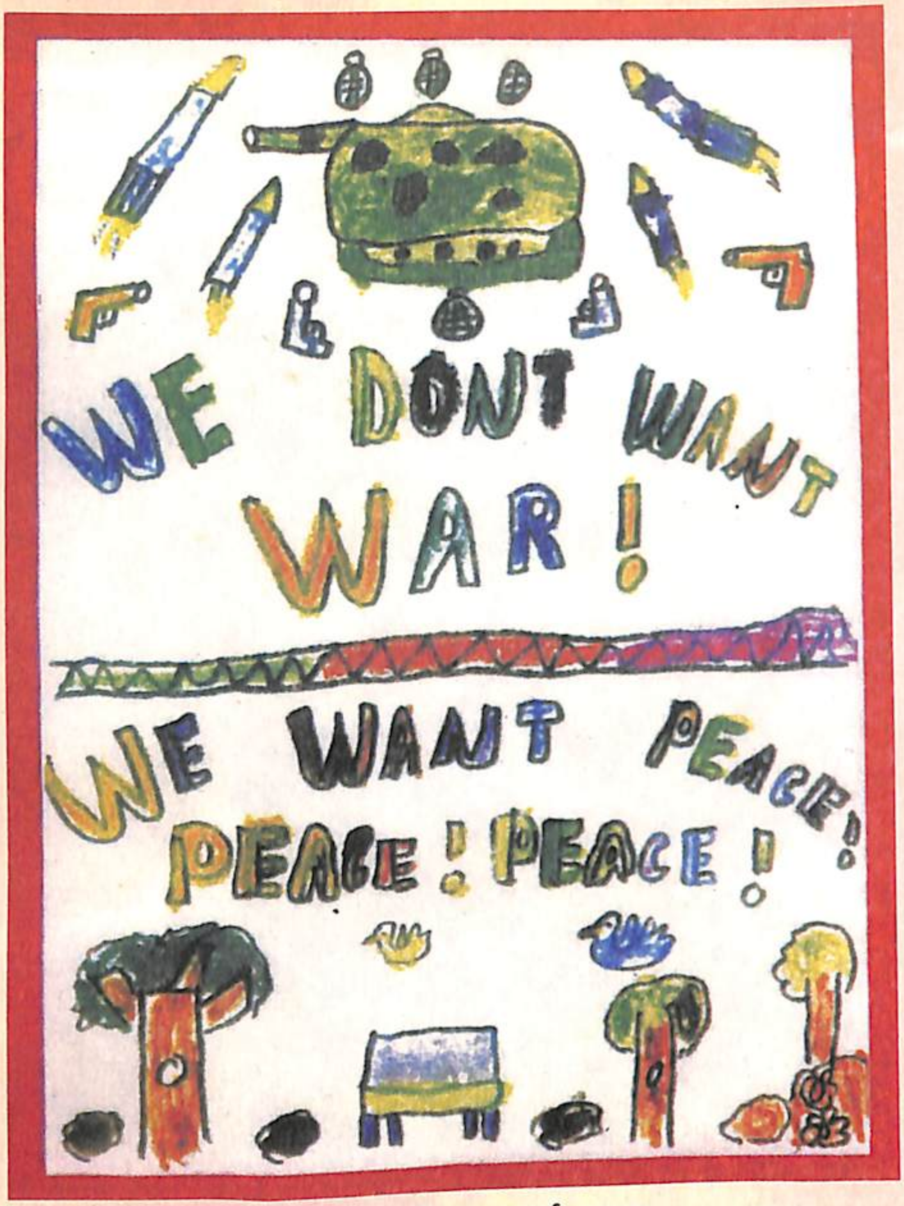

अरज़ान आन्टिया, 8 वर्ष, भारत

लिन फोर्डहैम, 7 वर्ष, ब्रिटेन

ए. जेनसेन, 9 वर्ष, डेनमार्क

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-18 अंक-10 अप्रैल 2003

क्या-क्या है इस अंक में ?

अण्डा खाने वाला साँप...
शक्ल से छोटा लगने वाला एक साँप एक बड़े से अण्डे को चट कर जाता है.... कैसे? बस उसके इसी हुनर पर एक लेख पेज 39 पर

इन दिनों हम सब एक युद्ध झेल रहे हैं...। युद्ध भी क्या? एक छोटे देश पर एक बड़े देश का हमला। अगर शांति और प्रेम में हमारा यकीन है, तो यह हमारे यकीन पर हमला है... हम पर हमला है। तुमसे हज़ारों मील दूर रह रहे बच्चे इस मसले पर तुमसे अपने मन की बातें कह रहे हैं... पेज 8 पर

सवालीराम... पेज 24 पर
नींद मौके कहाँ देखती है... हर कभी आ धमकती है। क्या नींद आने की कोई वजह होगी? चलो सवालीरामजी से ही पूछते हैं...

कहानी

12 बछिया
28 बैल

कविताएँ

11 बेर के काँटे
34 रोज़ सबेरे

खेल-प्रयोग

8 खेल कागज़ का: कुत्ता

हर बार की तरह

2 इस बार की बात
18 मेरा पन्ना
26 चित्र पहेली
32 माथापच्ची
35 चकमक समाचार
37 खेल समाचार

और यह भी

15 बच्चों के अधिकार: ले वैन कुओंग
16 पुस्तक चर्चा
23 सवालीराम
38 पहेलियाँ
39 अण्डा खाने वाला साँप

आवरण चित्र ''बचाओ!'' – तातियाना सिपारोवा, पन्द्रह वर्ष, चेकोस्लोवाकिया

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात ....

युद्ध के बाद

भोर आती है
पर क्या यह दिन है?
पृथ्वी नामक यह स्याह खाली खोल
थमा हुआ है।
हवा धूल को उड़ाकर
दूर ले जाती है।
सन्नाटा बहुत पहले ही छा गया था,
तब, जब सूरज आसमान छोड़ गया।
एक बम आया और चला गया,
और हम नहीं रहे
पर हमारी रूहें जिन्दा हैं
ये तो सदा के लिए बनी रहेंगी
एक दूसरे को आवाज़ देतीं
और एक बहुत पहले मर चुकी
और भुलाई जा चुकी
ग्रह की बातें करतीं।

मेरी सॉयर, 11 वर्ष, ऑस्ट्रेलिया

20 मार्च 2003 को इराक पर अमरीका और ब्रिटेन के हमले के विरोध में भोपाल में निकली रैली का चित्रांकन

मेहर, पाँच वर्ष, भोपाल

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-18 अंक-10 अप्रैल 2003

सम्पादन
विनोद रायना
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

सहयोग
राकेश खत्री

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/एच आई जी – 453
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016 (म. प्र.)
फोन : 2463380
ई-मेल : eklavyamp@vsnl.com

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

युद्ध नहीं, शान्ति

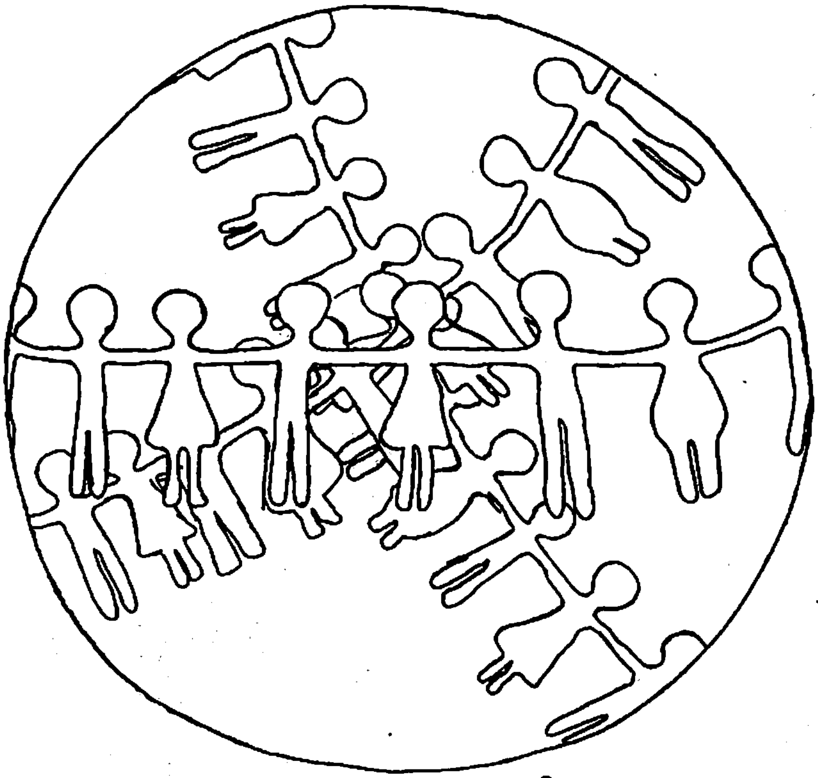

पाइवी हरनो, 16 वर्ष, फिनलैण्ड

पिछले महीने की 20 तारीख को अमरीका और ब्रिटेन की फौजों ने इराक देश पर हमला कर दिया। इसके बारे में तुमने भी अखबारों में पढ़ा होगा, रेडियो-टी.वी. पर सुना होगा। इन बड़े लोगों के बीच जो भी झगड़े हों, क्या उन्हें सुलझाने का युद्ध ही अकेला रास्ता है?

बड़े लोग, बड़े-छोटे देश आपस में लड़ते रहते हैं। लड़ाई जीतने के लिए ढेर सारे हथियार बनाते जाते हैं, खूब सारा पैसा इसी में खर्च कर डालते हैं। लेकिन तुम बच्चे क्या सोचते हो? दुनिया भर के और बच्चे क्या सोचते हैं? क्या तुम जानना चाहोगे? इस बार हम तुम्हें रिचर्ड और हेलेन एक्सली द्वारा संकलित एक किताब में से कुछ अंश दे रहे हैं। इस किताब का शीर्षक है - 'मेरी दुनिया - शान्ति'। इसके सभी लेख, कविताएँ और चित्र बच्चों ने ही बनाए हैं। तुम भी इस विषय पर अपने मन की बात चकमक को लिखकर भेजना, ज़रूर। फिलहाल यह पढ़ो...

जब कोई युद्ध होता है तो हम दुनिया भर के बच्चों को ही सबसे ज़्यादा भुगतना पड़ता है। हमारे बड़े नफरत को अपनी ज़िन्दगी पर हावी हो जाने देते हैं, और हम बच्चों को भी, जो एक-दूसरे को सिर्फ प्यार करना चाहते हैं, नफरत करना सिखाया जाता है।

जेराल्ड होयटे, 10 वर्ष, ट्रिनिडैड

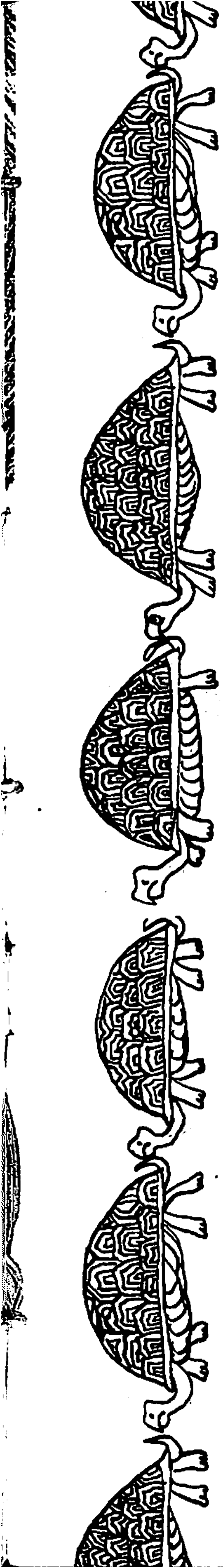

बढ़े चलो। पर कहाँ? ख़ात्मे की ओर?? – जॉन मिलर, 13 वर्ष, ब्रिटेन

मैं एक ऐसी दुनिया के
सपने देखती हूँ
जहाँ लोग
आज़ादी की शान्ति में
जीते हों।
एक खूबसूरत दुनिया।

मैं एक ऐसी दुनिया के
सपने देखती हूँ
जहाँ फूल
अबाध खिलते हों,
जानवर सरलता से
बढ़ते हों।

मैं एक ऐसी दुनिया के
सपने देखती हूँ
जहाँ सबके पास वक्त हो,
वक्त,
तुम्हारे और मेरे लिए।

सोनिया गिल, 13 वर्ष, बारबाडॉस

किरसिक्का सालस, 16 वर्ष, फिनलैण्ड

मिस्टर युद्ध,
क्या आपको अब भी यह बात समझ में नहीं आई है कि आप एक बेवकूफी भरी चीज हैं? लोगों को रोना अब और पसन्द नहीं। बच्चों को अब आपके बारे में सुनना भी नहीं। सब चाहते हैं कि दुनिया एक हसीन जगह रहे। और हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे हमसे भी अच्छी ज़िन्दगी जिएँ, इसलिए आपको जाना होगा। कृपया शान्ति को दुनिया में हमेशा के लिए रहने दीजिए।

दिलेक तासान, 13 वर्ष, तुर्की

मुझे लगता है कि कठिन ज़िन्दगी, युद्ध, गरीबी और भूख यह सब इन्सान की गलतियों के कारण है। ये कुछ लोगों और कुछ देशों के लालचीपन के कारण पनपते हैं। ये इसलिए पनपते हैं क्योंकि हम एक छोटे-से शब्द को हमेशा भूल जाते हैं। वह शब्द है 'प्यार'।

अब्दुल मजीद ईमान, 15 वर्ष, मिस्त्र

किसी को भी युद्ध पसन्द नहीं,
सिर्फ सिपाही का खेल खेलने वाले
बच्चों के अलावा,
पर अपनी साइकिलों पर सवार
ख्याली हवाई-जहाज़ उड़ाते हुए,
उन्हें पता भी नहीं होता
कि हकीकत में
युद्ध कैसा होता है।

युद्ध ताकत का खेल है,
महीनों तक बंकरों में ज़िन्दा रहना,
पता नहीं लोग क्यों लड़ते हैं,
क्योंकि इसकी कीमत
वे अपनी जान देकर चुकाते हैं।

टेरी ग्लैनफील्ड, 11 वर्ष, ब्रिटेन

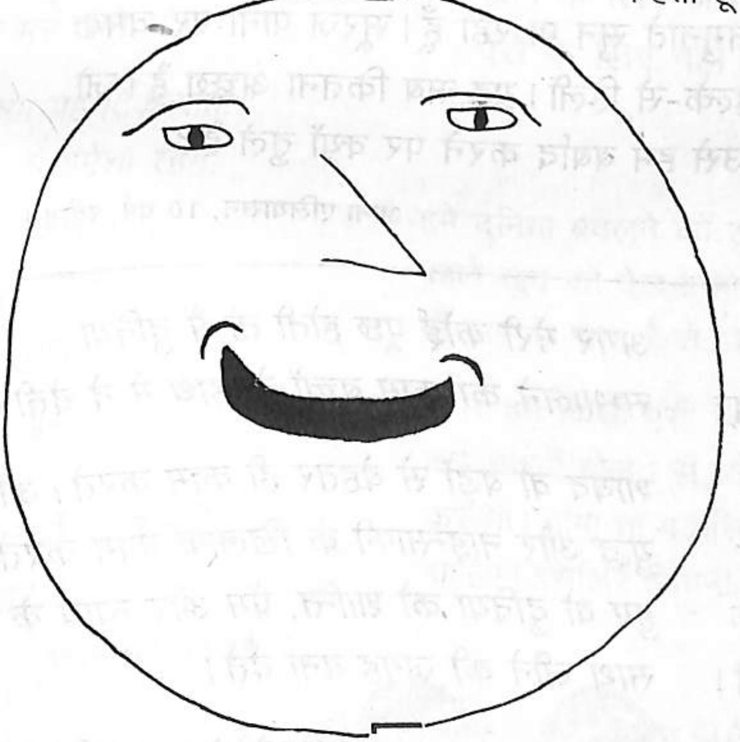

थोड़े-थोड़े दिनों बाद होने वाले ये कत्ले-आम, जो इतने सारे जान-माल का नुकसान करते हैं और इन्सान को जानवर बना देते हैं, ये अब बन्द होने चाहिए।

अगर बीस साल की तनावपूर्ण प्रगति के बाद हमें फिर एक भीषण महायुद्ध का सामना करना पड़े, तो मैं तो कहूँगी कि हमें प्रगति नहीं चाहिए।

विमला, फीजी

मेरी प्यारी दुनिया,

लोग युद्ध क्यों करते हैं? मुझे लगता है कि आम तौर पर यह पैसे के लिए या कोई और चीज़ के पीछे होता है। पर चीज़ तो चीज़ है। उसके पीछे के झगड़े को तो युद्ध के बगैर भी सुलझाया जा सकता है। फिर जब भी किसी भी बात पर युद्ध होता है तो उसमें पैसे खर्च तो हो ही जाते हैं, कुछ मिलता थोड़े ही है। मैं सच कहता हूँ क्योंकि मैं यह जानता हूँ।

आपका,

एल्डी लडलो, सं. रा. अमरीका

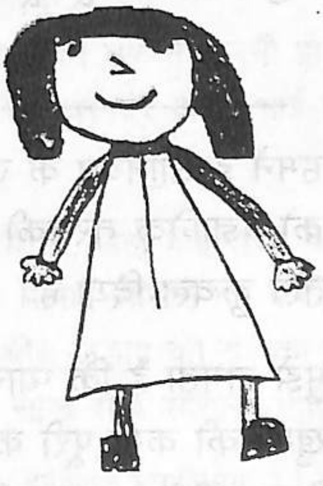

बेटी एन कुम्बरबैच, 10 वर्ष, ट्रिनिडैड

रतन , 12 वर्ष, भारत

मैं चिड़ियों को चहकते-गुनगुनाते सुन पा रही हूँ। सूरज पानी पर चमक रहा है। पेड़ों की डँगालें हल्के-से हिलीं। यह सब कितना अच्छा है। जो कुछ इतना खूबसूरत है, उसे हम बर्बाद करने पर क्यों तुले हैं?

आना एलियासन, 10 वर्ष, स्वीडन

हमने इन्सानियत के उसूलों को वैज्ञानिक तरक्की के भार तले कुचल दिया है।

मुझे लगता है कि प्यार और खुशी की कमी पूरी करने के लिए मशीनें काफी नहीं होतीं।

संजीव मेहता, 15 वर्ष, भारत

अगर मेरी कोई पूछ होती तो मैं दुनिया सम्भालने का काम बच्चों के हाथ में दे देती।

शायद वो बड़ों से बेहतर ही काम करते। और युद्ध और नाइन्साफी के खिलाफ काम करते हुए वो दुनिया को शान्ति, प्रेम और न्याय के साथ जीने की जगह बना देते।

मारिनू पेनेयोटा, 14 वर्ष, सायप्रस

शान्ति, कभी नहीं

शान्ति, पूरी शान्ति
युद्ध नहीं, बन्दूकें नहीं,
सब कोई दोस्ताना,
यह असम्भव है।

बन्दूकें हमेशा रहेंगी,
हमेशा लड़ाईयाँ।

काश कि अमन होता
चर्च में चैन मिल जाता है।
अगर दुनिया भी
वैसी हो पाती,
ज़रा सोचो,
तुम कितने खुश होते,
यह जानकर कि तुम महफूज़ हो
युद्ध से,
बमों से,
बेमौत मर जाने से।

पर क्या यह टिक पाता?
झगड़े तो हमेशा रहेंगे,
हमेशा बहस,
हमेशा बन्दूकें,
हमेशा तोपें,
हमेशा युद्ध,
पर शान्ति?
कभी नहीं, कहीं नहीं।
शान्ति।

इयान होरे, 12 वर्ष

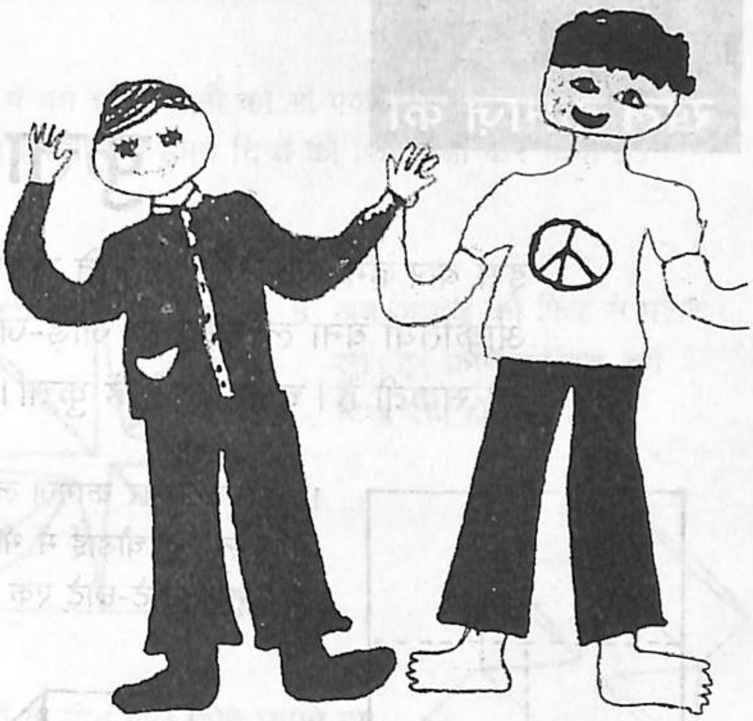

पिया-लीना केट्टुनेन, 14 वर्ष, फिनलैण्ड

मैं शान्ति में भरोसा रखती हूँ, युद्ध में नहीं। अगर मार-काट न हो तो दुनिया कितनी अलग जगह बन सकती है। और मुझे यह भी लगता है कि खेल खेल के लिए और मज़े के लिए खेले जाने चाहिए, पैसे के लिए नहीं।

एंगस बाथगेट, 11 वर्ष, ऑस्ट्रेलिया

हमें दुनिया बदलने की शुरुआत अपने घर से करनी होगी। पहले खुद को देखना होगा कि हम घर पर अपने भाई-बहनों माँ-बाप के साथ कैसे रहते हैं।

अगर हम किसी ऐसी जगह रहते हों, जहाँ कई तरह के लोग कई भाषाएँ बोलते हों, तो मैं वो भाषाएँ सीखने की कोशिश करूँगा। भाषा तो पड़ोसियों के बीच जुड़ाव का तरीका होना चाहिए। इसलिए जितनी भाषाएँ सीख सकें सीखना चाहिए।

राजेन्द्रन नागलिंगम, 13 वर्ष, भारत

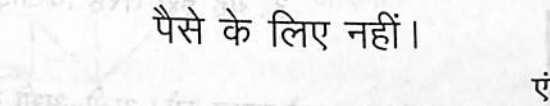

कुत्ता

इस बार हम एक ऐसी आकृति बनाएँगे। ऐसी कई सारी आकृतियाँ बना लो तो उन्हें जोड़-जोड़कर बहुत सी चीज़ें बनाई जा सकती हैं। चलो बनाते हैं कुत्ता।

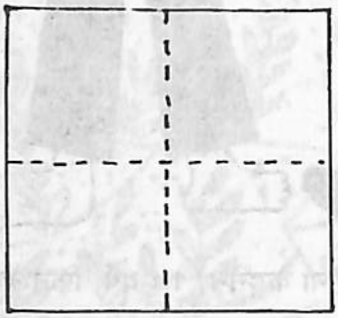

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। इसे लम्बाई में बीच से मोड़कर खोल लो। चौड़ाई में भी ऐसे ही मोड़कर खोल लो। कागज़ में तुम्हें छोटे-छोटे एक जैसे चार वर्ग नज़र आ रहे होंगे।

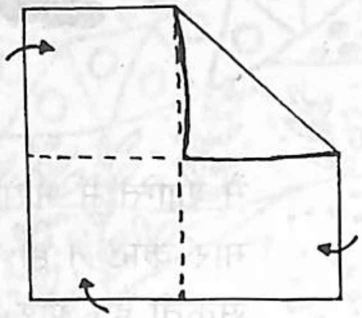

2. चारों कोनों को बीच की तरफ लाते हुए मोड़ लो।

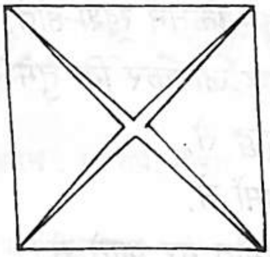

3. यह इस तरह दिखाई देगा।

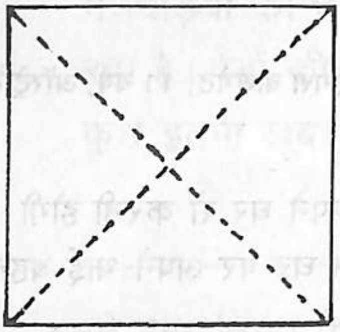

4. अब कागज़ को पलट लो। अभी-अभी बनाए मोड़ छिप जाएँगे। यहाँ से हम चित्रों को बड़ा करके बता रहे हैं।

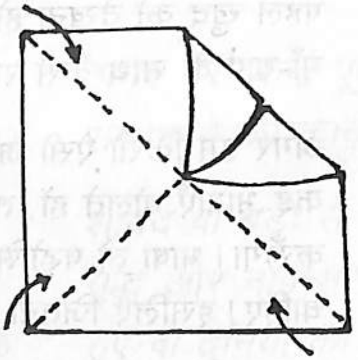

5. अब चारों कोनों को फिर से मोड़ लो। पिछली बार की तरह ही।

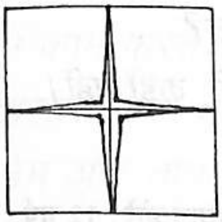

6. कागज़ को फिर पलट लो। ऊपरी तह में फिर चार खुले पल्ले दिख रहे होंगे।

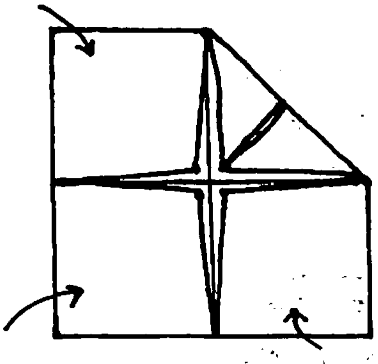

7. इस आकृति में बने चारों कोनों को भी एक बार फिर केन्द्र की तरफ मोड़ना है। यहाँ से हमने चित्रों को फिर बड़ा कर दिया है।

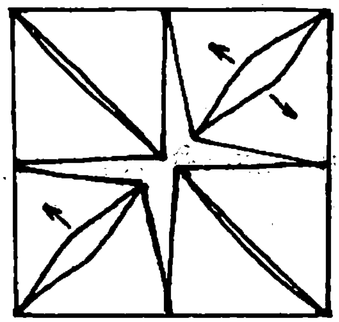

8. अब कागज़ को फिर से पलट लो। हर कोने पर एक वर्ग दिख रहा होगा।

9. आमने-सामने के कोई भी दो वर्गों के बीच वाले कोने उठाते हुए बाहर की ओर ले जाओ। इस तरह से वर्ग के बीच बना खुला कर्ण और भी खुल जाएगा और ऐसी आकृति बनेगी।

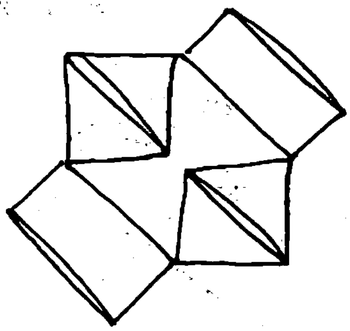

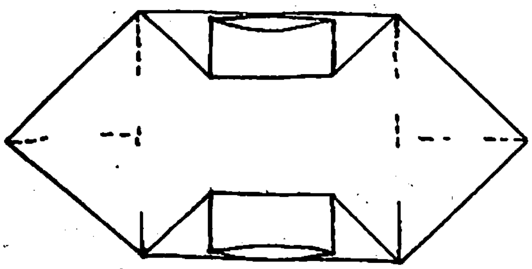

10. अब तुम्हें ऊपर की आकृति के दोनों वर्गों के बीच वाले कोनों को बाहर की तरफ खींचना है। पूरी आकृति खुलकर कुछ इस तरह बन जाएगी।

11. अब इस आकृति को उलट लो। ऐसी दिखती है न। इस आकृति पर बनी टूटी रेखाओं पर से मोड़ते हुए दोनों कोनों को केन्द्र की ओर ले आओ।

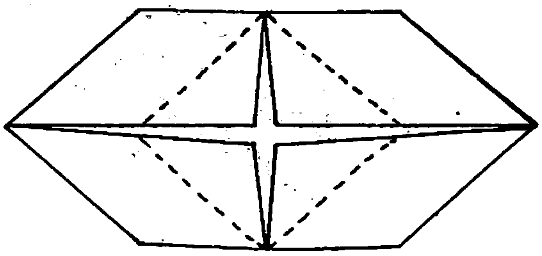

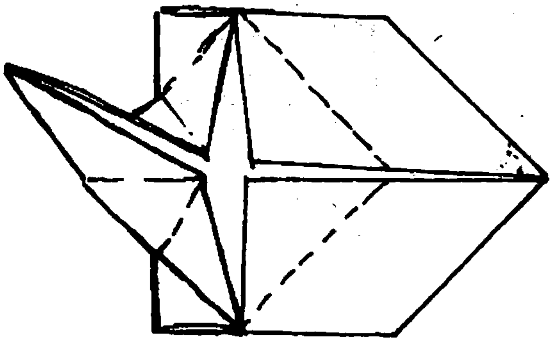

13. एक कोने को मोड़ने के बाद ऐसी आकृति दिखेगी। दूसरी ओर भी इसी तरह मोड़ लो। इस आकृति में ऊपर को उठे हुए दो चोंच रहेंगे।

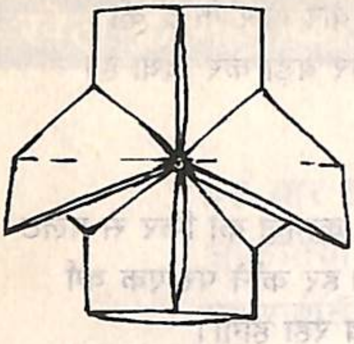

14. अब इन ऊपर उठे हुए दोनों चोंचों को नीचे की ओर दबा दो। फिर नीचे की ओर निकले चौकोर भाग को आकृति के बीच से मोड़ते हुए पीछे से ऊपर ले जाओ।

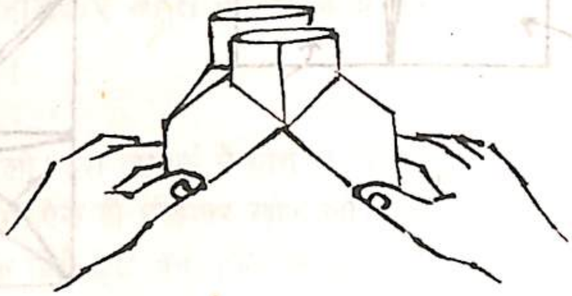

15. ऐसी आकृति मिली? बस अब इसी तरह की दो आकृतियाँ और बना लो।

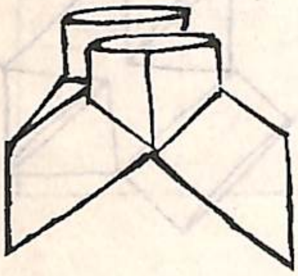

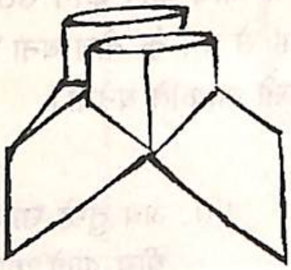

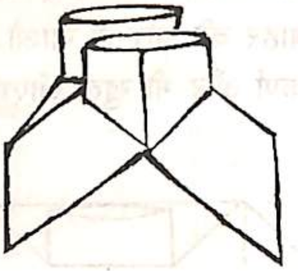

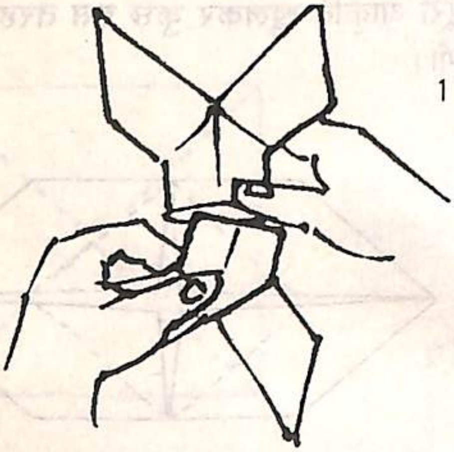

16. तीनों में से कोई भी दो आकृति उठाओ। उनमें से किसी के भी एक खुले पल्ले को दूसरी आकृति के खुले पल्ले में डाल दो। इस तरह से इक चौपाया किस्म की आकृति बन जाएगी।

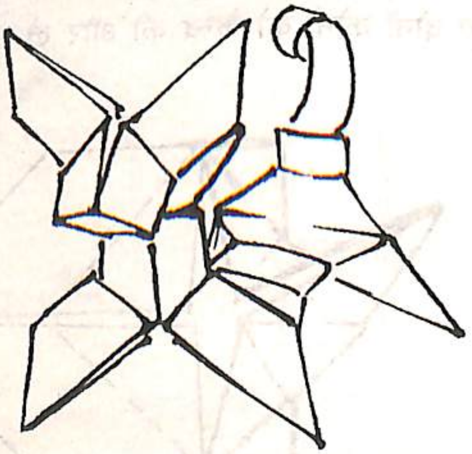

17. इस आकृति के किसी भी तरफ ऊपर के तरीके से ही बची हुई आकृति का एक खुला पल्ला फँसा दो। अब ज़रा सँभलकर रहना। अरे भई तुम्हारे कुत्ते का मुँह जो बन गया है!

18. कागज़ से एक पूँछ बनाकर लगा दो। बाकी रंग-रोगन का जिम्मा तुम पर छोड़ते हैं।

सभी चित्र : विवेक वर्मा

बेर के काँटे

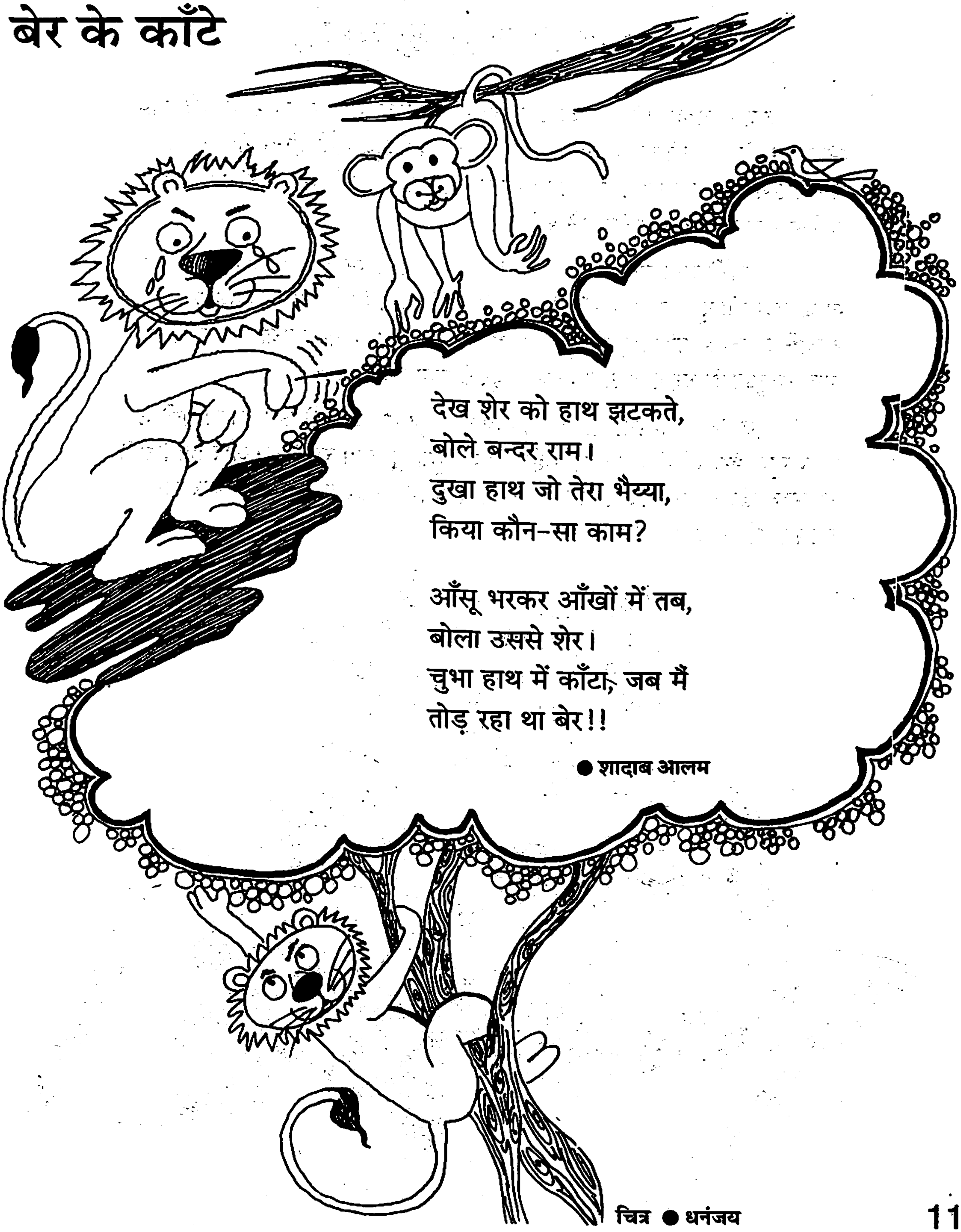

देख शेर को हाथ झटकते,
बोले बन्दर राम।
दुखा हाथ जो तेरा भैय्या,
किया कौन-सा काम?

आँसू भरकर आँखों में तब,
बोला उससे शेर।
चुभा हाथ में काँटा, जब मैं
तोड़ रहा था बेर!!

● शादाब आलम

चित्र ● धनंजय

बछिया की कहानी

जब मैं बच्ची थी तो एक छोटे-से सुन्दर पहाड़ी कस्बे में रहती थी। मई और जून के महीनों को छोड़कर सारे साल वहाँ खूब सर्दी होती थी। घर के भीतर हम आराम से एक दूसरे से सटे रज़ाइयों की गर्मी में बैठे पिताजी या जैमिनी दा से कहानियाँ सुनते थे।

जैमिनी दा हमारे रसोइया थे। वे बहुत अच्छे आदमी थे। और उससे भी अच्छे कहानी सुनाने वाले थे। वे हमें शेरों की कहानियाँ सुनाते। अधिकतर कहानियाँ तो हमारे गाँव मोशुआ के बारे में ही थीं। मोशुआ पूर्वी बंगाल में है। हम मोशुआ के रहने वाले हैं। हमारे पुरखे वहीं पैदा हुए थे।

एक दिन जैमिनी दा ने हमें अपने ससुर की कहानी सुनाई। जैमिनी दा के ससुर और लोगों की तरह नहीं थे। वे बहुत गुमसुम रहते थे। और हर किसी से बहुत डरते थे। लेकिन आधी नींद में वे इतने निडर हो जाते कि शेर का सामना भी आसानी से कर लें।

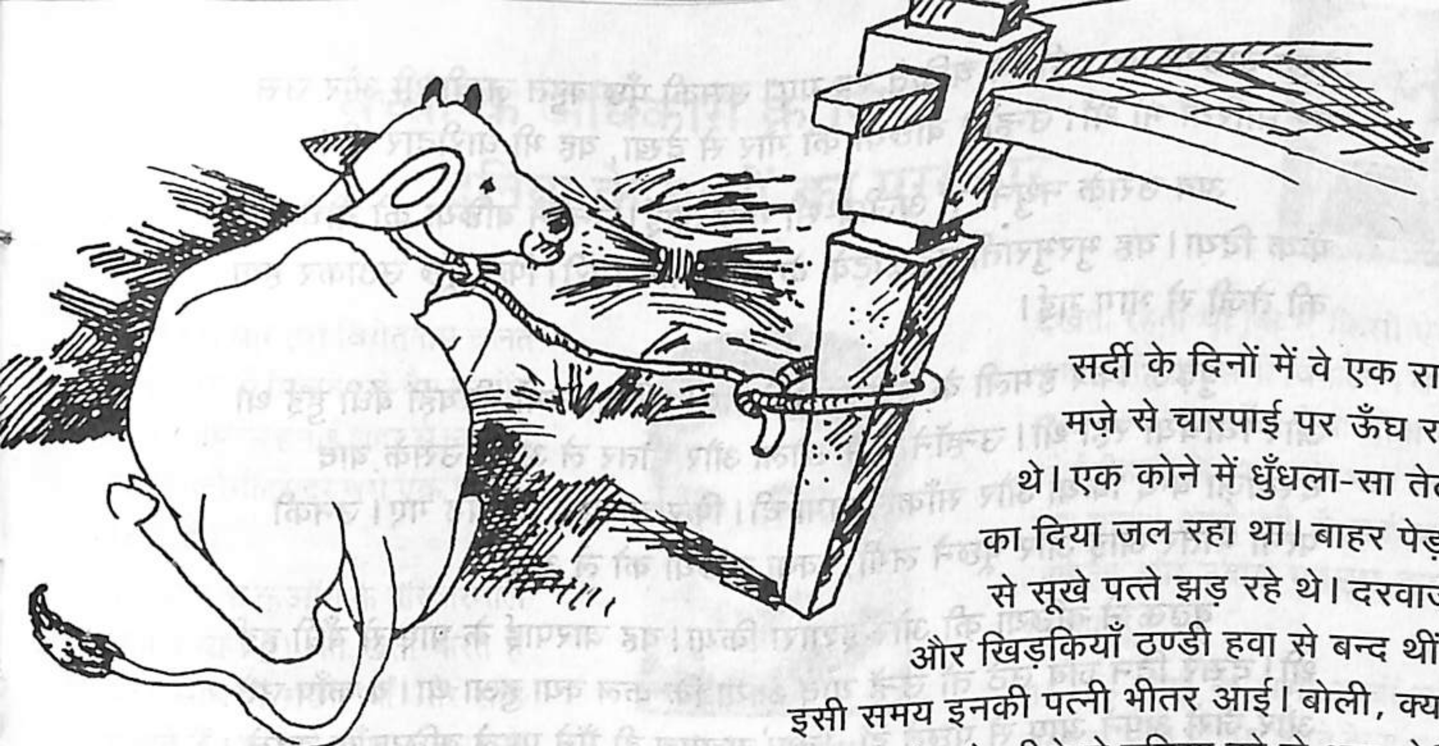

सर्दी के दिनों में वे एक रात मज़े से चारपाई पर ऊँघ रहे थे। एक कोने में धुँधला-सा तेल का दिया जल रहा था। बाहर पेड़ों से सूखे पत्ते झड़ रहे थे। दरवाज़े और खिड़कियाँ ठण्डी हवा से बन्द थीं। इसी समय इनकी पत्नी भीतर आई। बोली, क्या इमली के पेड़ के नीचे से बछिया को ले आए हो?

बुढ़ऊ एकदम हड़बड़ाकर उठे। सचमुच वे बछिया के बारे में बिलकुल भूल गए थे। वे मशाल जलाने के लिए भी नहीं रुके। झट दरवाज़ा खोला और अँधेरे में बाहर निकल गए। तभी उन्होंने अचानक देखा कि बछिया तो सड़क किनारे खड़ी है।

'बेचारी बछिया' उन्होंने सोचा, 'लगता है इसने डर के मारे रस्सी तुड़ा ली है।' बिना एक शब्द बोले उन्होंने उसे बच्चे की तरह गोद में उठा लिया और घर की ओर लपके। बछिया इतनी डरी हुई थी कि गोद से निकलने के लिए बड़े ज़ोर से हाथ पैर मार रही थी। लेकिन बुढ़ऊ भी हिम्मत हारने वाले व्यक्ति नहीं थे। उन्होंने उसे और भी ज़ोर से पकड़ लिया और अपनी चाल तेज़ कर दी। लेकिन ज्यों ही वे दरवाज़े के पास पहुँचे भीतर के प्रकाश की एक

रेखा बछिया पर पड़ी। वे चकित रह गए। उसकी पूँछ बहुत लम्बी थी और उस पर धारियाँ भी थीं। उन्होंने बछिया को गौर से देखा, वह भी धारीदार थी।

अब उसके नथुनों से अजीब-सी गन्ध आई। उन्होंने बछिया को नीचे फेंक दिया। वह भुरभुराती हुई झटके के साथ नीचे गिरी। फिर पूँछ उठाकर हवा की तेज़ी से भाग गई।

बुढ़ऊ फिर इमली के पेड़ के नीचे गए। बछिया अभी भी वहीं बँधी हुई थी और घिघिया रही थी। उन्होंने उसे खोला और भीतर ले आए। उसके बाद दरवाज़ा बन्द किया और साँकल लगा दी। फिर चारपाई पर बैठ गए। उनकी पत्नी भीतर आई और पूछने लगी, 'क्या बछिया को ले आए?'

बुढ़ऊ ने बछिया की ओर इशारा किया। वह चारपाई के पाए से बँधी हुई थी। दूसरे दिन जब उठे तो उन्हें याद आया कि कल क्या हुआ था। वे काँप उठे और जैसे अपने आप से पूछते हों, 'क्या सचमुच ही मैंने पहले बछिया के बदले शेर को पकड़ लिया था?'

सभी चित्र ● धनंजय

यह कहानी एकलव्य द्वारा विकसित प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम की कार्य -पुस्तक खुशी-खुशी से साभार लिया गया है।

बच्चों के अधिकारों के लिए दुनिया के बच्चों का पुरस्कार

चलो इस बार हम वियेतनाम चलते हैं कुओंग से मिलने। ले वैन कुओंग वियेतनाम के हनोई शहर से लगभग 80 किलोमीटर दूर बसे एक गाँव में रहता है।

16 साल के कुओंग के परिवारवाले धान (चावल) की खेती करते हैं और साथ में मछलियाँ और साँप पालते हैं। हाँ भई साँप - ज़हरीले नाग! तुमने शायद पहले भी कहीं सुना या पढ़ा होगा कि दक्षिण पूर्वी एशिया के लोगों के भोजन में साँप एक पसन्दीदा चीज़ है। कुओंग कहता है, "हमारे पास 50 कोबरा हैं और हम इन्हें कई रेस्तराँ को बेचते हैं। मैं भी इन साँपों को इनके सिर के पिछले हिस्से से पकड़ लेता हूँ, पर ध्यान रखना पड़ता है कि साँप कहीं अपनी पूँछ से गुदगुदाकर हमारी पकड़ ढीली न कर दे!"

बचपन से ही कुओंग के दोनों पाँव काम नहीं करते थे। वह अपने बारे में बात करते हुए कहता है, "तीन साल पहले तक मैं खुद से चल भी नहीं पाता था। पर अब तो मैं बीस मिनट तक लगातार चल लेता हूँ। फिर भी इन पाँवों के कारण आज भी मैं कई सारी चीजें नहीं कर पाता हूँ। मुझे फुटबॉल का खेल बहुत पसन्द है पर मैं उसे सिर्फ देख सकता हूँ, खेल नहीं सकता। यूँ तो

ले वैन कुओंग

मुझे अपनी उम्र के हिसाब से आठवीं कक्षा में होना चाहिए था पर मैं सातवीं में पढ़ता हूँ। वह इसलिए कि मुझे बचपन में स्कूल जाने के लिए एक साल तक इन्तज़ार करना पड़ा, ताकि जब मेरी छोटी बहन स्कूल जाने लगे तो मेरा व्हीलचेयर धकाकर मुझे भी ले जा सके।

मैं और मेरी बहन स्कूल की पढ़ाई में बहुत होनहार थे इसलिए हमें एक विशेष स्कूल में दाखिला मिला। पर वह स्कूल इतना दूर था कि वहाँ मेरी बहन ही जा सकती थी, मैं नहीं। मैं फिर पीछे छूट गया।"

कुओंग के स्कूल में कई बच्चे ऐसे भी हैं जो उससे इसलिए जलते हैं कि वह पढ़ाई में तेज़ है। कुछ बच्चे उसकी विकलाँगता के कारण उसका मज़ाक उड़ाते हैं, उस पर दादागिरी करते हैं। कुओंग कहता है, "जब मैं छोटा था तो हर समय ख्वाब देखता रहता था कि मैं किसी ऐसी जगह रहूँ जहाँ सभी विकलाँग बच्चे एक साथ रह सकें। ऐसा होता तो कोई किसी के साथ भेदभाव नहीं कर पाता। अभी भी मैं कई बार अकेला और उदास महसूस करने लगता हूँ।"

15-16 साल के सभी बच्चों की तरह कुओंग भी प्रेम करने के ख्वाब देखता है। वह कहता है, "मेरी प्रेमिका बहुत खूबसूरत है। उसका नाम क्या है, यह मैं नहीं बताऊँगा। यह तो राज़ है!"

बच्चों के अधिकारों के लिए दुनिया के बच्चों के पुरस्कार वाले जजों में कुओंग विकलाँग बच्चों और उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें दादागिरी सहनी पड़ती है। यहाँ जज होने के अनुभव के बारे में वह कहता है, "हमारे देश में मुझे बिरले ही कभी कोई छूता है। यहाँ अधिकतर लोग विकलाँग लोगों से डरते हैं। पर यहाँ मेरे दूसरे जज साथी और अन्य लोग भी जब मुझसे खुलकर गले मिलते हैं, हाथ मिलाते हैं, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। मेरे लिए सबसे ज़रूरी बात यह है कि लोग मेरे साथ, और सभी विकलाँग बच्चों के साथ भी वैसा ही बर्ताव करें जैसा दूसरे बच्चों के साथ करते हैं।"

लौट के चूहा घर को आया!

क्या एक हाथी और एक चूहे में दोस्ती हो सकती है? शायद तुम्हें अटपटा लगे और हँसी भी फूट पड़े! मगर ऐसा हुआ। एक चूहा और एक गिलहरी में खूब छनती थी। गिलहरी रोज़ चूहे को अखरोट खिलाती थी तो चूहा उसे बेरों की दावत देता!

एक दिन उनके घर के पास से एक हाथी गुज़रा। गिलहरी तो उसे देखते ही पेड़ पर जा पहुँची पर चूहा वहीं खड़ा रहा। इतना बड़ा डीलडौल देखकर उसने हाथी से पूछा, ''भई तुम कौन हो?''

हाथी क्या बोलता ... बोला, ''हाथी हूँ।''

हाथी ने भी चूहे से पूछा, ''और तुम.....?''

''मैं चूहा हूँ।''

चूहे की हालत देख हाथी बोला, ''अरे भई.... कुछ खाते क्यों नहीं!''

चूहे ने कई चीज़ें गिनवाईं। ''मैं अखरोट खाता हूँ, मिठाई खाता हूँ, बेर खाता हूँ ......।''

हाथी के समझ में कुछ नहीं आया। उसने कहा अगर तुम मेरे जैसे डीलडौल वाले बनना चाहते हो तो मेरे साथ चलो। तुम्हें खूब केले खिलाऊँगा। बस क्या था, चूहा तैयार हो गया।

उसकी दोस्त गिलहरी ने कुछ समझाइशें दीं मगर सब बेकार! हाथी और चूहे का सफ़र बड़ा मज़ेदार रहा। अब ये तो तुम जब चूहे से मिलोगे तो पता चलेगा कि उस चूहे की सेहत सुधरी, यानी वो हाथी हुआ या कि चूहा ही रहा। और उसकी दोस्त गिलहरी का क्या हुआ?

क्या कहा .... चूहे का पता! इस चूहे से तुम एक किताब के ज़रिए मिल सकते हो। किताब का नाम है.... लौट के चूहा घर को आया! इस किताब की कहानी तो बढ़िया है ही, चित्र भी जानदार हैं। रंगीन चित्र तुम्हें बार बार किताब पलटने पर मजबूर करेंगे।

किताब पढ़ोगे तो ज़रूर बताना कि किताब तुम्हे जँची या नहीं।

समीक्षा : सुशील शुक्ल

किताब	:	लौट के चूहा घर को आया
लेखक	:	गिरिजा रानी अस्थाना
चित्रकार	:	सुरेन्द्र सुमन
प्रकाशक	:	चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट
कीमत	:	पंद्रह रुपए

पिंजरे का तोता

रमाकान्त शर्मा के कहानी संग्रह 'पिंजरे का तोता' में कुल चार छोटी-छोटी कहानियाँ हैं। पहली कहानी उड़नबाज एक राजकुमार और एक राजकुमारी की कहानी है। इसमें राजकुमारी एक जादूगरनी की भूमिका में है। इस कहानी में राजकुमारी अपने जादुई करिश्मों के ज़रिए राजा को मात देने की कोशिश करती है। और छोटा राजकुमार उन जादुओं से बचता है।

दूसरी कहानी 'वनराज का न्याय' एक खरगोश और एक लोमड़ी की कहानी है। वैसे तो तुमने पहले इस तरह की कई कहानियाँ पढ़ी होंगी। लेकिन यह किस्सा कुछ अलग तरह का है। एक बार जब खरगोश लम्बी छुट्टियाँ बिताने जाता है तो वह अपनी अँगूठी और एक ज़ंजीर अपनी दोस्त लोमड़ी के पास छोड़ जाता है। वह जब लौटकर आता है तो लोमड़ी अपनी प्रचलित चालाकी भरी हरकतों से मूर्ख बनाने की कोशिश करती है। कहानी में आगे बताया है कि उसे ये चीज़ें वापस पाने के लिए क्या-क्या पापड़ बेलने पड़ते हैं।

'गिलहरी और बन्दर' तीसरी कहानी है। इसमें एक अखरोट के पेड़ पर अपना बसेरा जमाए एक कट्टो गिलहरी अखरोट खाते हुए जीवन गुज़ार रही होती है। तभी एक खों खों नाम का बन्दर वहाँ आता है। वह पेड़ से सारे अखरोट तोड़कर नीचे फेंक देता है। गिलहरी के लाख विनती करने के बाद भी वह नहीं मानता। ऊपर से वह एक कुल्हाड़ी लेकर आ जाता है। बस यहीं से कहानी में एक नया मोड़ आता है। खैर, आखिर में गिलहरी और बन्दर की दोस्ती हो जाती है।

चौथी और अन्तिम कहानी है, 'शेर ने चुनाव लड़ा'। इस कहानी में एक दिन शेर महाराज चिड़ियाघर से रफूचक्कर होकर शहर में पहुँचते हैं तो क्या देखते हैं कि पूरे शहर में चुनाव का माहौल है। शेर को इसमें खूब मज़ा आता है। वे झाड़ियों में छुपकर इसका आनन्द लेते हैं। वे देखते हैं कि राजा चुने जाने में इतना आनन्द आता है। तब वे जंगल पहुँचकर घोषणा करते हैं कि जंगल में भी चुनाव होंगे। फिर क्या हुआ? फिर जंगल में चुनाव हुआ....। शेर के साथ चुनाव लड़ा हाथी ने। अब आगे की कहानी तो तुम किताब से ही पढ़ना।

पहली कहानी को छोड़कर शेष तीनों ही बेहतरीन ताने-बाने के साथ बुनी गई हैं। तुम्हें ज़रूर पसन्द आएँगी। किताब के कवर को छोड़, अन्दर के सभी चित्र बहुत अच्छे नहीं हैं।

समीक्षा : दिनेश पटेल

किताब	:	पिंजरे का तोता
लेखक	:	रमाकान्त शर्मा
चित्रकार	:	चंचल
प्रकाशक	:	ज्ञानदूत
कीमत	:	बीस रुपए

मैं साइकिल चलाने लगी

मैं सातवीं में पढ़ती थी। तब मुझे साइकिल चलानी नहीं आती थी। एक दिन मेरे बड़े भैया मुझे साइकिल सिखाने ले गए। भैया साइकिल पकड़ते और मैं साइकिल पर बैठकर चलाती।

एक दिन एक बूढ़ा आया और कहने लगा यह लड़की इतनी बड़ी हो गई पर इसे साइकिल चलानी नहीं आती। उस वक्त भैया कुछ नहीं बोले पर मुझे बहुत गुस्सा आया। मैं मन ही मन कहने लगी ... 'उस बूढ़े को कहने को किसने कहा था। आ गया कहने! उसके बच्चे को साइकिल चलानी आती है इसका मतलब यह तो नहीं कि सबको साइकिल चलानी आती है।' इस तरह मैं उस बूढ़े को भला-बुरा कह रही थी। तभी भैया ने साइकिल छोड़ दी और मेरा ध्यान न होने के कारण मैं काँटों में जा गिरी। मैंने सोचा इस बूढ़े के कारण ही मेरी यह हालत हुई है। भैया मुझे अस्पताल ले गए। डाक्टर ने चोट पर मरहम लगाकर पट्टी कर दी।

थोड़े दिन बाद मैंने फिर साइकिल सीखना शुरू कर दिया। कुछ दिनों में मैं साइकिल चलाना सीख गई। मैंने सोचा अब वह बूढ़ा मिले तो उसे बताऊँ कि मैंने साइकिल सीख ली है। पर आज तक वह बूढ़ा मुझे नहीं मिला।

● अंकिता पंड्या, पादरा, बड़ौदा, गुजरात

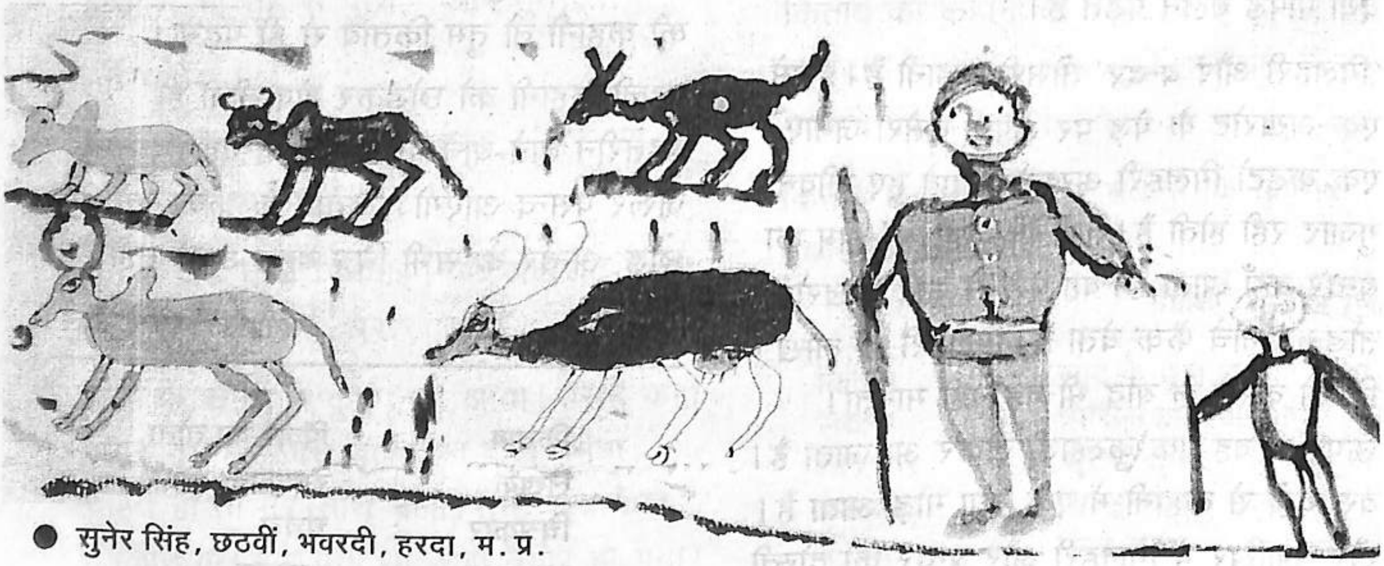

● सुनेर सिंह, छठवीं, भवरदी, हरदा, म. प्र.

● रोली गुप्ता, पाँच वर्ष. शहडोल, म.प्र.

मेरी बहिन

मेरी बहिन बहुत ही प्यारी
मेरी बहिन बहुत ही प्यारी
करती दिन भर आनाकानी

सारे दिन मुझे चिढ़ाती
फिर भी वह मुझको है लुभाती
जब मैं गाना गाती वह
मुझे डाँटती फटकारती

जब मैं रोने लग जाती
वह मुझे मनाने लगती

एक दिन मेरे हाथ से
गुलदस्ता क्या फूटा
गुस्से में आकर उसने
मारा मुझे चाँटा

दीदी का अभी न गुस्सा उतरा
मारा उसने मुझे जोर का धक्का
जब करी मैंने उससे कट्टी
घबराकर लाई वो मरहम पट्टी

उसके बाद नहीं हुई
कभी हमारी लड़ाई
करते हम सारे दिन पढ़ाई

● अनीता चौधरी, छठवीं, देवास, म.प्र.

घूमता सूरज सारा जमाना
पेड़ पर झूला डाले
लड़कियाँ गातीं गीत सुरीले

नदी की धारा कल-कल बहती
चिड़ियाँ चीं चीं का शोर मचातीं
तिनका चुन घोंसला बनातीं
बैठ घोंसले में अण्डा देतीं
अपने अण्डों को प्यार से सेतीं

हाथी की चिंघाड़ से
सारा जंगल हिल जाता
शाम का चाँद रोशनी बिखराता
सारा जग प्रकाशमय हो जाता

शाम जाती सुबह आती
नाविक चल देते नाव लेकर
समुद्र में मछलियाँ पकड़ने
सारा नजारा देख सूरज
जाता अपने घर दुबारा

● रीता सिंह, सातवीं, देवास, म.प्र.

चिट्ठी

● विनीता, दूसरी, कांकरिया, देवास, म. प्र.

कुछ समय पहले की बात है। हमारी गर्मियों की छुट्टियाँ चल रहीं थीं। मोहल्ले के सभी बच्चे तरह-तरह के खेल खेल रहे थे। उसमें मैं भी था। अचानक कमल के मन में आया कि वह अपने दोस्त राजू को चिट्ठी लिखेगा। परन्तु चिट्ठी लिखी कैसे जाए, हमारे पास तो सामग्री नहीं थी। कागज तो था पर कलम नहीं थी.... कलम थी पर उसमें रिफिल नहीं थी।

इतने में कमल का भाई किशोर नींबू के रस से भरी छोटी शीशी लेकर आया। उसने कहा कि मैं नींबू का रस बेचूँगा। बोतलों के छोटे-छोटे ढक्कनों में सभी ने नींबू का रस लिया। इसके बाद कुछ देर तक तो सभी खेलते रहे। परन्तु चिट्ठी वाली बात भूले नहीं। सुरेन्द्र ने कमल को चिट्ठी लिखने का उपाय सोचा। उसने लकड़ी की छोटी, पतली डण्डी लेकर उसको नींबू के रस में डुबोया, फिर कागज पर लिखने लगा। सबको एक तरफ रखने लगा। इस तरह उसने कागज के कई टुकड़ों पर लिखा।

इतने में कुल्फी वाले की आवाज सुनाई दी। सब खेल छोड़कर कुल्फी वाले के पास कुल्फी खाने चले गए। लौटकर आए तो सुरेन्द्र ने देखा कि उसका लिखा सब सूख चुका है। तो उसने इन कागजों के टुकड़ों को खराब समझकर फेंक दिया। क्योंकि उसका मानना था कि पानी से कागज का लिखा कुछ देर तो दिखता है परन्तु बाद में मिट जाता है। इस तरह खेलकर सब अपने-अपने घर चले गए। और वह कागज के टुकड़े कच्चे रास्ते में इधर उधर बिखर गए। कुछ मिट्टी में दब गए।

इसके बाद हल्की वर्षा हुई। सब बच्चे मिट्टी के घर बनाने के लिए बाहर आ गए। कमल भी बाहर आया तो उसकी नजर कागजों के बिखरे टुकड़ों पर पड़ी जिसके ऊपर कमल लिखा देखा जैसे किसी ने केरोसिन से लिखा हो। उसने वह कागज़ मुझे दिखाया। मैंने कहा कि तू केरोसिन से लिखकर लाया है। उसने मना कर दिया। इतने में सुरेन्द्र आ गया। उसे दिखाया तो उसने बोला कि कुछ दिनों पहले कमल को चिट्ठी लिखने के लिए उसने नींबू के रस से लिखा था। इस तरह हम दूसरे कागज के टुकड़ों को ढूँढ रहे थे।

जो हमारे हाथ में कागज का टुकड़ा था, उस पर लिखा कमल मिट गया था। शायद समय अधिक हो जाने के कारण। फिर क्या था। सब नींबू के रस से लिखते, थोड़ी देर धूप में सुखाते। जब उस पर कुछ नहीं दिखता तो उसे पानी में डुबाते और फिर पढ़ते थे। इस तरह हम एक दूसरे को गुप्त चिट्ठी लिखने लगे। पानी नहीं होने पर हम हल्की आग में सेंककर पढ़ लेते थे। क्योंकि आग पर सेंकने से नींबू के रस का लिखा हुआ मिटता नहीं।

● महेन्द्र कुमार वैष्णव, अर्जुनपुरा, अजमेर, राजस्थान

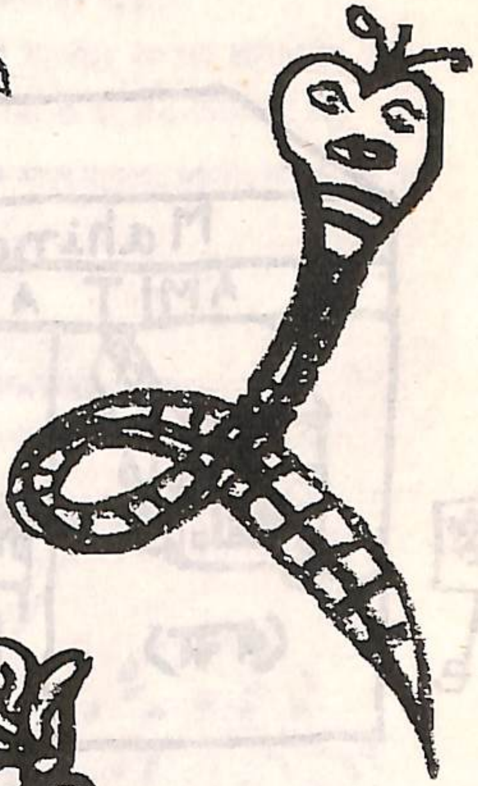

● गौरा, चौथी, भवरदी, हरदा, म. प्र.

मटकू बन्दर

एक बन्दर था। वो सबको छेड़ा करता था। जब चिड़ियाँ अपना घोंसला बनाएँ तो वह हँसता था। मधुमक्खियाँ अपना घोंसला बनाएँ तो वह हँसता था। जब एक दिन वो घूमता-घामता जंगल में निकल गया तो बहुत तेज की बारिश आई। वह भीगने लगा तो वह काँपने लगा। पेड़ पर गया तो चिड़ियों ने उसे भगा दिया। जब मधुमक्खी के पास गया तो उसने भी उसे भगा दिया। बन्दर बेचारा काँप रहा था। इतने में बारिश रुक गई और बन्दर घर चला गया।

● अमन, दूसरी, इतवारा, भोपाल, म.प्र.

मेरे ऊपर गाय दौड़ी
मैंने मारा डण्डा
गाय बोली ना मारो
मेरे प्यारे भाई
दूँगी तुम्हें दूध मलाई

● सुरेश कुमार, दूसरी, लोधर, कानपुर, उ. प्र.

हम लोग पहले बस द्वारा अमित आटो सेल्स गए। फिर बस अड्डे के मालिक श्री भगवान सिंह ने हम लोगों को बस के बारे में बताया। बस के चार पहिए धुरी में लगते हैं। धुरी के ऊपर फ्रेम होता है। चेचिस के ऊपर बस की बाडी होती है। स्टेयरिंग से बस को रोका जाता है। गाड़ी की स्पीड को एक्सीलेटर से बढ़ाया जाता है। अँधेरे में चलने के लिए लाइट लगाया जाता है। एजेन्सी संजय घई की है। एजेन्सी का नाम अमित आटो सेल्स है। बस आन्ध्रप्रदेश से बनकर आती है। बस में तेल थोड़ी मात्रा में डालकर ग्राहक को दिया जाता है। यहाँ पर 50 लोग काम करते हैं। बस का मूल्य 3,75,000 रुपए है।

कहानी एवं चित्र ● प्रखर, तीसरी, फैज़ाबाद, उ.प्र.

क्या आपको मालूम है?

क्या आपको मालूम है?
क्यों है धरती गोल?
क्यों खुलती है पोल?

क्या आपको जानकारी है?
क्यों है हाथी बड़ा
क्यों है पेड़ खड़ा?

क्या आपको समझ में आया?
क्यों है जोड़ आसान?
क्यों है प्रतिशत निकालना कठिन?

क्या आपको दिखा?
क्यों है ब्राजील साउथ अमेरिका में?
और क्यों है इजिप्ट अफ़्रीका में?

● अथर्व शुक्ला, छठवीं, भोपाल, म. प्र.

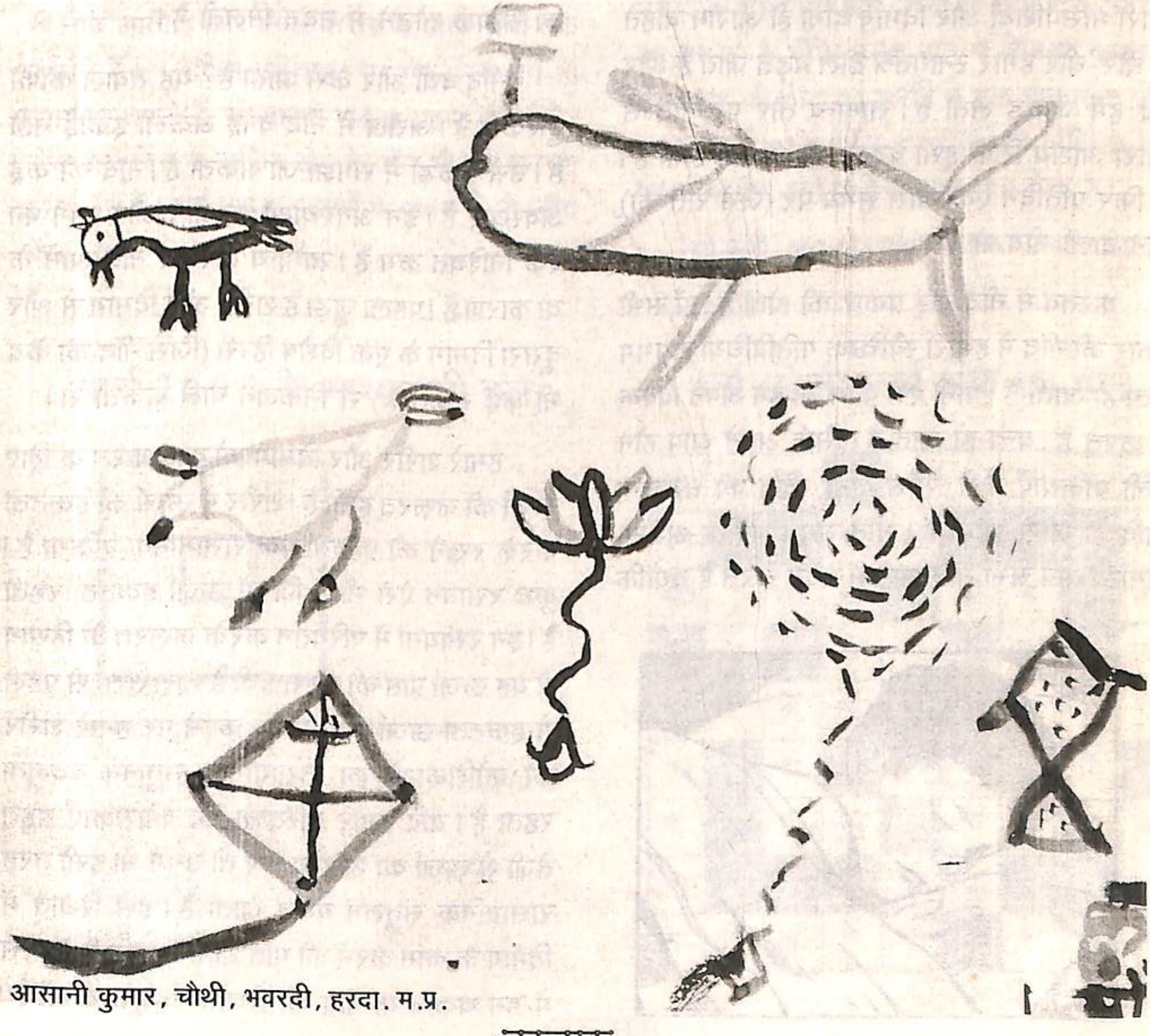

● आसानी कुमार, चौथी, भवरदी, हरदा. म.प्र.

सवालीराम

ये हैं सवालीराम। चकमक के पुराने पाठक इनसे परिचित हैं। मज़ाक नहीं, इनका नाम वाकई सवालीराम ही है! और इनका काम है लोगों के तरह-तरह के सवालों के जवाब ढूँढ-ढूँढकर बताना। बच्चों के सवालों का जवाब ढूँढने में इन्हें और भी मज़ा आता है। तुम सब भी इनसे अपने मन में कुलबुलाने वाले सवाल पूछना शुरू कर दो।

नींद क्यों आती है? कैसे आती है?

दिन भर के काम-धाम से जब हम थक जाते हैं तब हमारी माँसपेशियाँ और दिमाग दोनों ही आराम चाहते हैं। धीरे-धीरे हमारे स्नायुतंत्र ढीले पड़ते जाते हैं और नींद हमें जकड़ लेती है। सामान्य तौर पर नींद से हमारा आशय सिर्फ इसी प्रकार की नींद से होता है। या फिर प्रतिदिन एक खास समय पर (जैसे रात को) आने वाली नींद से।

वास्तव में नींद कई प्रकार की होती है। हाँ सभी प्रकार की नींद में हमारी स्वैच्छिक गतिविधियाँ लगभग खत्म हो जाती हैं। यानी ऐसे काम जो हम अपने विवेक से करते हैं, बन्द हो जाते हैं। सिर्फ अपने आप होने वाली प्रक्रियाएँ जैसे, साँस लेना, दिल का धड़कना आदि ही जारी रहती हैं। सोते समय शान्ति, अंधेरा, सामान्य ताप सभी नींद आने में मदद करते हैं क्योंकि इससे आसपास के वातावरण से हमारे सम्वेदी अंगों का सम्पर्क तोड़ने में मदद मिलती है।

नींद क्यों और कैसे आती है? यह सवाल काफी मुश्किल है। असल में नींद कोई अकेली इकाई नहीं है। उसे टुकड़ों में समझा जा सकता है। नींद की कई अवस्थाएँ हैं। इन अवस्थाओं के आने और जाने का एक निश्चित क्रम है। सामान्य तौर पर नींद आने के दो कारण हैं। पहला जुड़ा है शरीर और दिमाग से और दूसरा दिमाग के एक विशेष हिस्से (जिसे नींद का केंद्र भी कह सकते हैं) से निकलने वाले संकेतों से।

हमारे शरीर और दिमाग को काम करने के लिए ऊर्जा की ज़रूरत होती है। शरीर में ऊर्जा को इकट्ठा करके रखने की प्रक्रिया एक रासायनिक प्रक्रिया है। कुछ रसायन ऐसे भी हैं जिनमें ऊर्जा इकट्ठा रहती है। इन रसायनों में परिवर्तन करके ज़रूरत के हिसाब से यह ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। इस तरह से पहले से इकट्ठा ऊर्जा का उपयोग करने पर हमारे शरीर की कोशिकाओं का रासायनिक संतुलन बदलता रहता है। यदि हमारे मस्तिष्क की कोशिकाएँ बहुत तेज़ी से ऊर्जा का उपयोग करें तो उनमें भी इसी तरह रासायनिक संतुलन बदल जाता है। इस स्थिति में दिमाग के काम करने की गति धीमी पड़ जाती है। ऐसे में हम थकान या नींद की स्थिति महसूस करते हैं।

यह तो थी सामान्य नींद की बात। इसके अलावा कई और प्रकार की भी नींद होती है। उदाहरण के तौर पर बहुत से प्राणी प्रतिकूल परिस्थितियों (मौसम व वातावरण) में लम्बी तान के सोते हैं। इसका एक उदाहरण है मेंढक। हम सभी जानते हैं कि मेंढक कड़क ठण्ड या घोर गर्मी में ज़मीन के अन्दर या कोई सुरक्षित स्थान पर लम्बी नींद सोते हैं। इस तरह की नींद में प्राणी की सभी जैविक क्रियाएँ बहुत धीमी हो जाती हैं।

इस समय पर सो जाने से दिमाग की कोशिकाओं में रासायनिक संतुलन फिर पहले जैसा हो जाता है।

अब नींद आने के दूसरे कारण की बात करते हैं। मस्तिष्क के नींद वाले केंद्र से उत्पन्न संदेशों से भी नींद आती है और हमारे शरीर के अन्य अंगों तक पहुँचते हैं। ये संकेत मस्तिष्क के उस हिस्से को भी प्रभावित करते हैं जो बाहरी संकेत ग्रहण करता है। नींद वाले केंद्र के सक्रिय होने के और भी कई कारण हो सकते हैं। कई मादक पदार्थों के सेवन से भी 'नींद केंद्र' सक्रिय हो जाता है।

एक और प्रकार की नींद वह है जो हमें हर रोज़ आती है। यह एक तरह से सामान्य नींद है। इस नींद का समय व अन्तराल प्राणी के जीने के तरीके (भोजन प्राप्त करना व सुरक्षा) पर निर्भर करता है। इसीलिए मनुष्य के लिए रात और उल्लू के लिए दिन का समय आराम का है चूँकि उल्लू रात में शिकार करता है। इस तरह की नींद का शरीर में एक प्राकृतिक नियम बन जाता है। और फिर हर रोज़ एक निश्चित समय पर नींद केंद्र संकेत देना शुरू कर देता है।

तो चलो, अब सो जाओ। उठकर सवाल लिखना।

मार्च 2003 के माथापच्ची हल

2.

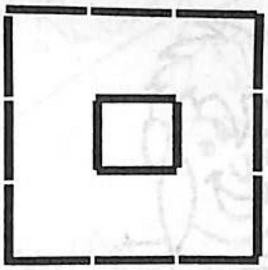

5. दशमलव, यानी दो दशमलव तीन यानी 2.3

6.

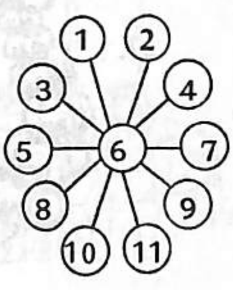

वर्ग पहेली मार्च अंक का हल

हो	डिं	ग		रं	ग	पं	च	मी
लि			ब	क				ना
का	र	खा	ना		पाँ	च		बा
	न		ठ	प्पा		म्म		जा
स	र	क	ना		पि	च	का	र
फ		टा		ही	रा		हि	
र		ई	सा		मि	ह	रा	ब
ना				रो	ड			क्ख
मा	चि	स	पे	टी		ठ	ह	र

चित्र-पहेली

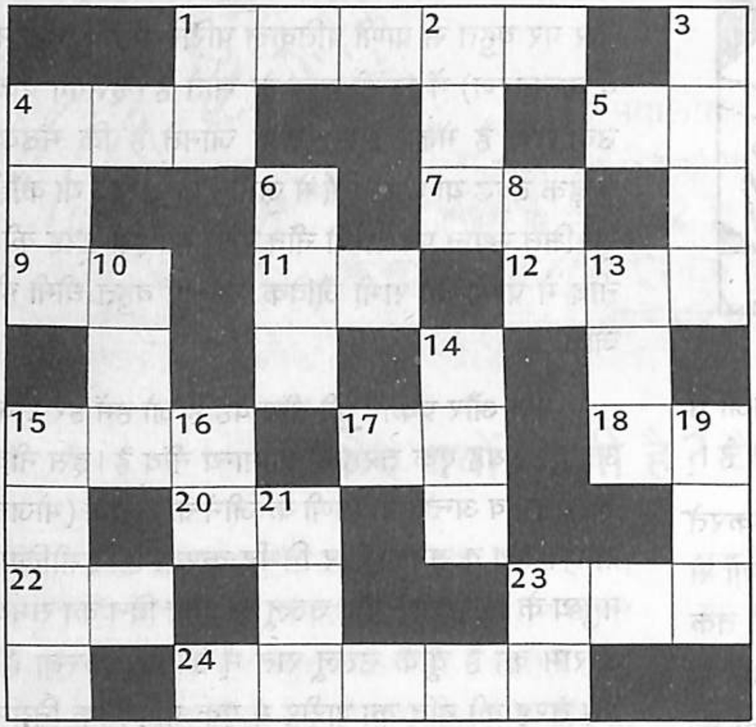

12.

15.

संकेत : बाएँ से दाएँ

1.

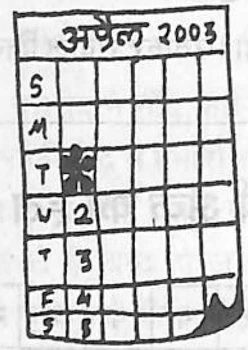

7.

17.

18. बराबर है ऊपरवाला (2)

20.

4.

9.

5.

11.

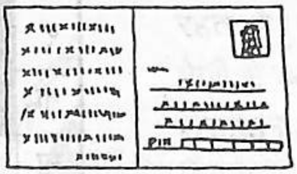

22.

23.

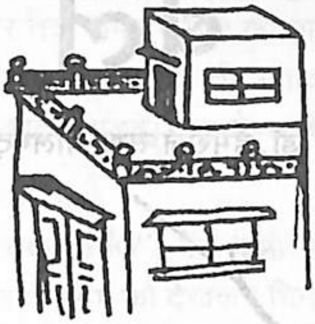

24.

संकेत : ऊपर से नीचे

1. अहार में मज़ा का भाव (2)

2.

3.

4.

6.

8. बाजरा में है राजा का शासन (2)

10.

13.

14.

15.

19.

16.

21.

23.

सभी चित्र : कैलाश दुबे

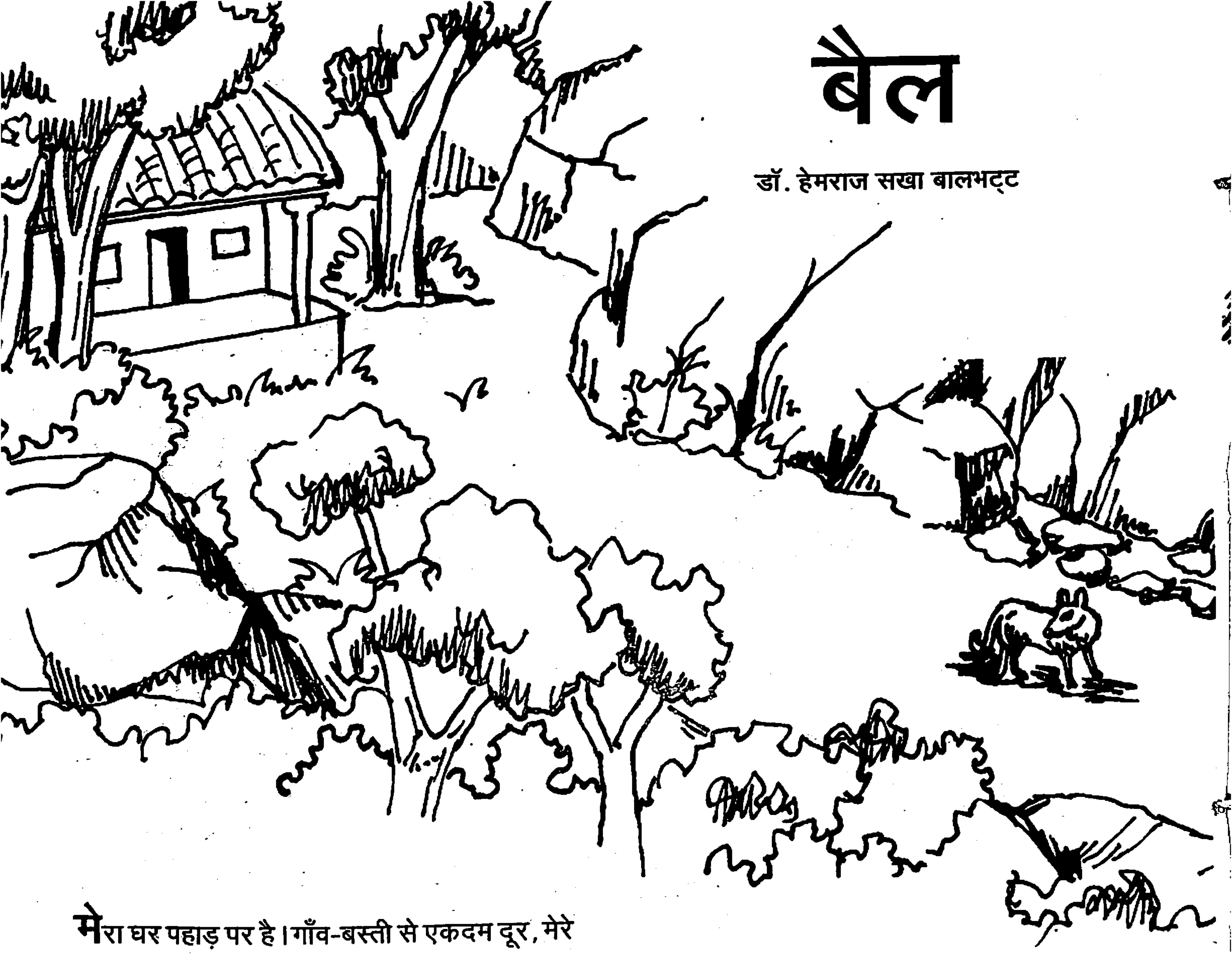

बैल

डॉ. हेमराज सखा बालभट्ट

मेरा घर पहाड़ पर है। गाँव-बस्ती से एकदम दूर, मेरे घर के चारों ओर एक बड़ा-सा अहाता है जिसमें चीड़, बाँस, देवदार, बुराँश, भीमल, पँया, डैंकण और खड़ीक के पेड़ उग आए हैं। और घर के चारों ओर एक छोटा-सा जंगल-सा लगता है। इन्हीं पेड़ों के बीच मैंने सेब, अमरूद, नाशपाती और मौसम्बी के छोटे-छोटे पौधे लगा रखे हैं और उनकी रखवाली के लिए एक लड़का भी रखा है। घर के ठीक नीचे से सड़क गुज़रती है, जो एक ओर सर्पाकार चढ़ती हुई पहाड़ की चोटी तक जाती है और दूसरी ओर ढलान से गुज़रती हुई देहरादून तक जाती है।

उस दिन मैं किसी काम से शहर जा रहा था। मैंने घर के नीचे सड़क पर खड़ा अपना स्कूटर स्टार्ट किया और चल पड़ा ढलान की ओर। मकान के नीचे पहला मोड़ पार करते ही देखा, नीचे से सड़क के किनारे-किनारे एक बूढ़ा बैल मेरी ओर चला आ रहा है। पहले तो वह अच्छा-भला सड़क की बाईं ओर चल रहा था किन्तु मुझे देखते ही अचानक मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। मुझे एकदम से ब्रेक लगाने पड़े और मैं बैल से टकराते-टकराते बचा।

मुझे बड़ा गुस्सा आया। ''आखिर तुम बैल के बैल ही रहे। इस तरह मेरे सामने आकर क्यों खड़े हो गए,'' मैंने कहा।

''क्यों खड़ा हो गया? लो यह देखो, ज़रा मेरी सींग तो देखो।'' उसने भी गुस्से में कहा और अपना एक सींग बिल्कुल मेरे सामने कर दिया।

मैंने देखा, उसका एक सींग टूटा हुआ था, उसके चारों ओर सिर तक जमे हुए खून की धारा के निशान बने थे। सींग से बदबू आ रही थी, मवाद बह रहा था और सींग के कोटर (गड्ढे) में लम्बे-लम्बे सफेद कीड़े रेंग रहे थे।

"तो मैं क्या करूँ?" मैंने कहा और मुँह फेर लिया। मुझे उसके सींग को देखकर घिन आ रही थी।

"क्या करूँ?" बैल ने आँखें तरेरकर मेरे प्रश्न को दोहराया। "तुम जल्दी से किसी डॉक्टर से मेरे सींग की मरहम पट्टी करवाओ। नहीं तो?..."

"नहीं तो क्या करोगे तुम?" मैंने बैल से व्यंग्यपूर्वक पूछा।

बैल बोला, "अगर तुमने मेरे सींग का इलाज नहीं करवाया तो ये कीड़े मेरे दिमाग में चले जाएँगे

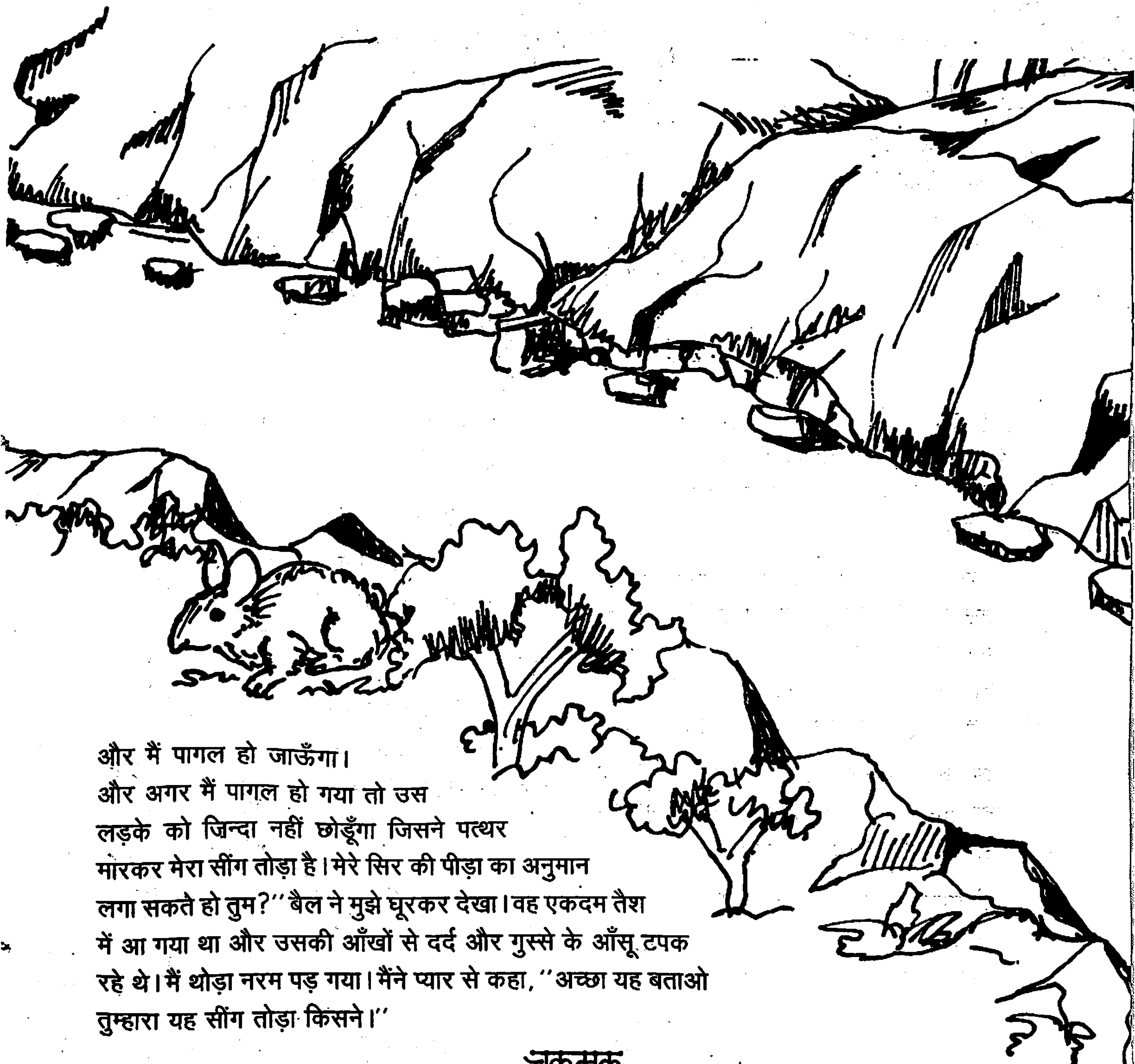

और मैं पागल हो जाऊँगा। और अगर मैं पागल हो गया तो उस लड़के को जिन्दा नहीं छोड़ूँगा जिसने पत्थर मारकर मेरा सींग तोड़ा है। मेरे सिर की पीड़ा का अनुमान लगा सकते हो तुम?" बैल ने मुझे घूरकर देखा। वह एकदम तैश में आ गया था और उसकी आँखों से दर्द और गुस्से के आँसू टपक रहे थे। मैं थोड़ा नरम पड़ गया। मैंने प्यार से कहा, "अच्छा यह बताओ तुम्हारा यह सींग तोड़ा किसने।"

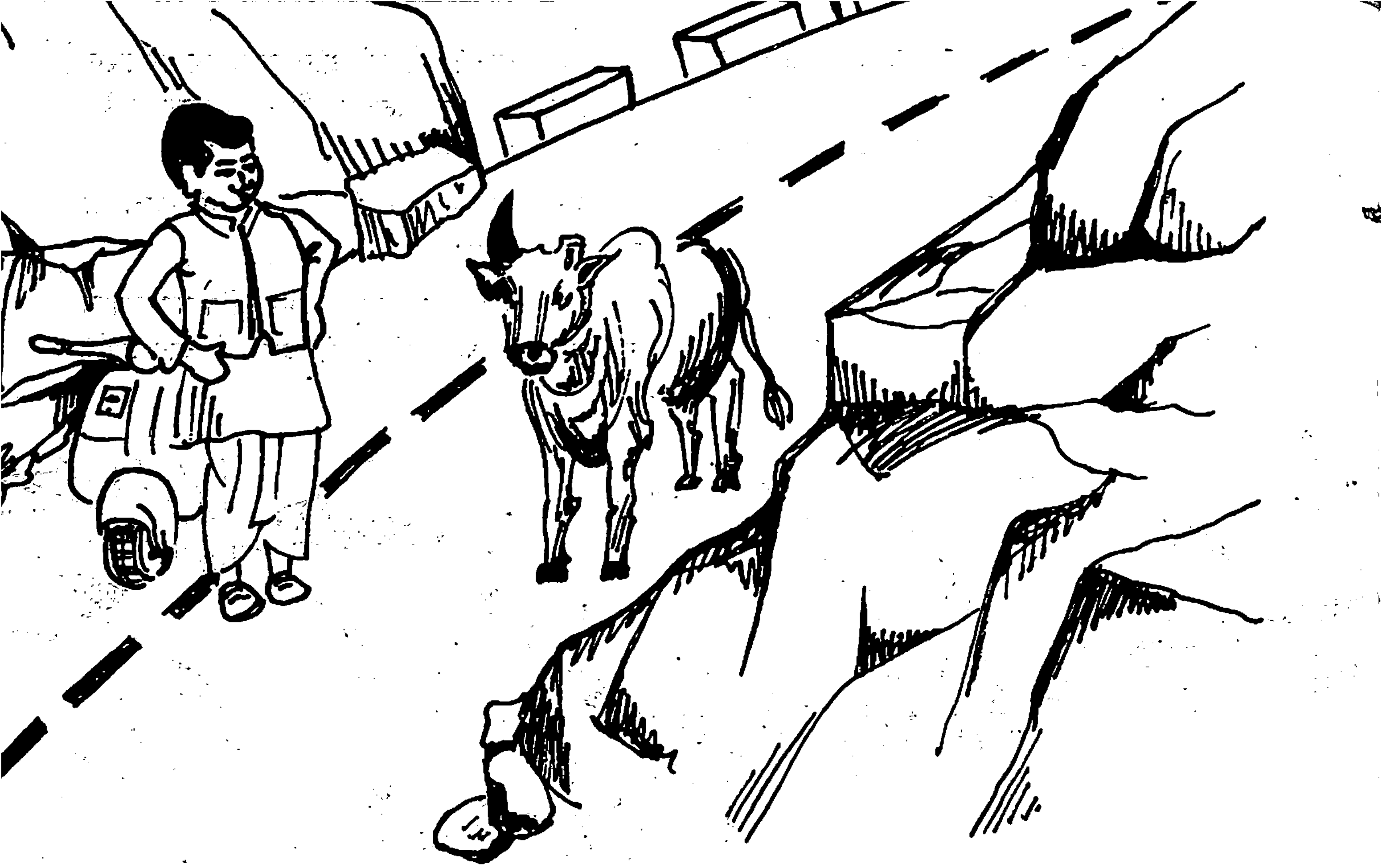

''तुम्हारे लड़के ने'' बैल ने कहा, ''तुम्हारे उस लड़के ने जिसे तुमने अपनी बागवानी की रखवाली के लिए रखा है, परसों पत्थर मारकर उसने मेरा सींग तोड़ दिया था।''

''बिल्कुल ठीक तोड़ा है उसने तुम्हारा सींग। तुमने जरूर कोई न कोई नुकसान कर दिया होगा। तुम हमारे बगीचे में घुस आए होगे और या तो तुमने नाशपाती का कोई पौधा चबा लिया होगा या अमरूद का या कोई दूसरा नुकसान कर दिया होगा।''

अब बैल थोड़ा नरम पड़ गया, उसने कहा, ''मुझे क्या पता कौन अमरूद है कौन नाशपाती। मुझे तो खाने को हरी पत्तियाँ चाहिए, बस।''

''तो तुम हमारे बगीचे में क्यों घुस आते हो? जंगल में चरने क्यों नहीं जाते?'' मैंने कहा।

बैल बोला, ''जंगल तुमने छोड़े ही कहाँ हैं? सारे तो काट-काटकर जला डाले हैं।''

''तो तुम घास खाया करो।'' मैंने कहा।

''घास? घास भी कहाँ बची हैं। सारी तो फूँक डाली है। देखा नहीं जंगलों में कितनी आग लगी है। सूखी घास तक नहीं बची है हमारे लिए।'' बैल के शब्दों में खासा आक्रोश था।

''हाँ बात तो तुम ठीक कह रहे हो।'' मैंने कहा।

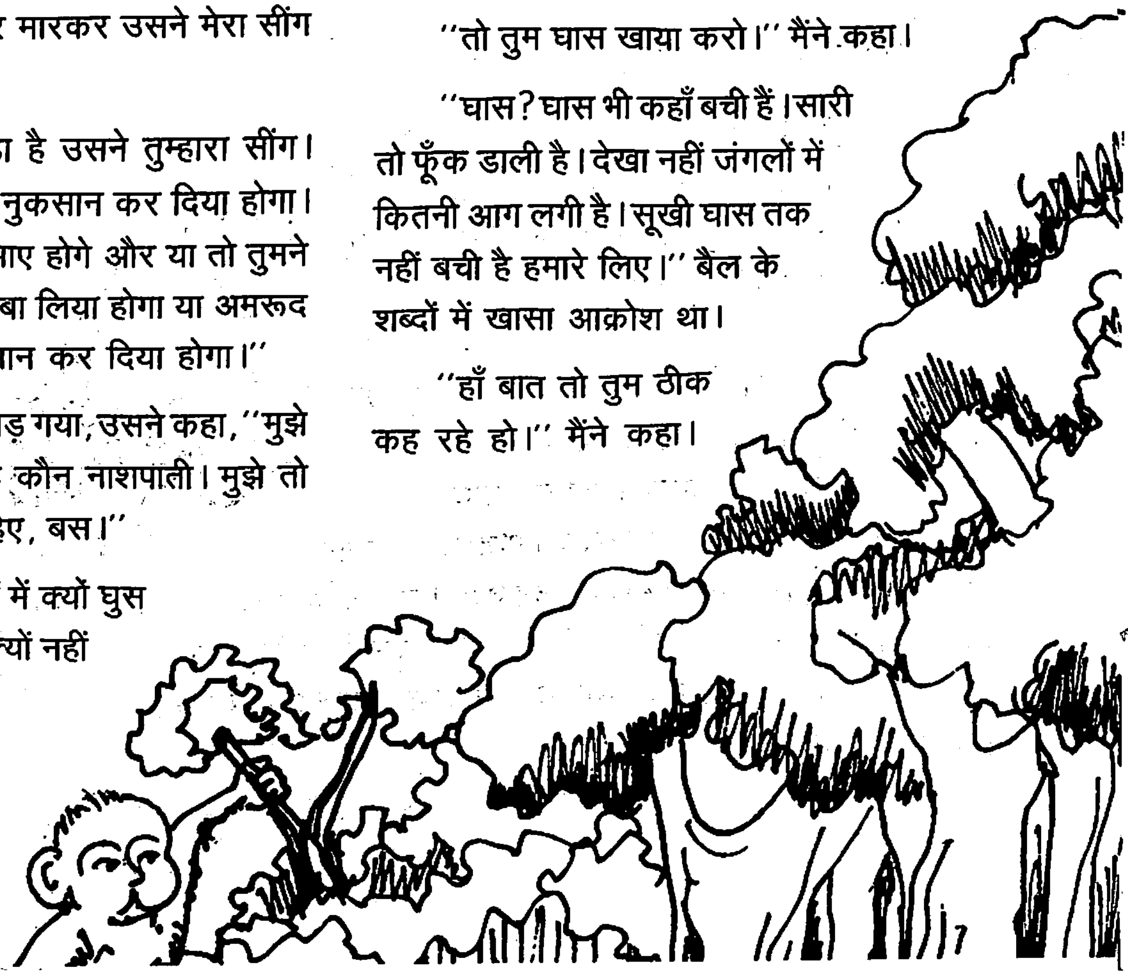

''अच्छा बताओ मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?''

बैल मुस्कराया, ''अभी तो आप चलकर मेरे सींग पर दवा लगवाएँ। उसकी मरहम-पट्टी करवा दीजिए, बस। मेरे सिर में बड़ी पीड़ा हो रही है।''

मैंने कहा, ''ठीक है, चलो तुम्हें किसी डॉक्टर को दिखाता हूँ। आओ, पीछे स्कूटर पर बैठ जाओ।

बैल हँसा, ''नहीं-नहीं, मैं आपके स्कूटर से तेज दौड़ सकता हूँ,'' थोड़ी ही देर में हम पशु हॉस्पिटल के सामने थे। वहाँ डॉक्टर ने बैल के सींग के कीड़े साफ किए, उसमें दवा डाली और सींग की मरहम-पट्टी कर दी। बैल तो एकदम खुश हो गया। मैंने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा, ''मैं उस शैतान लड़के को ज़रूर डाँटूँगा जिसने तुम्हारे सींग पर पत्थर मारा है। लेकिन अब तो तुम नाराज़ नहीं हो न?''

''नहीं-नहीं,'' बैल ने कृतज्ञता से कहा और बिल्कुल मेरे पास आकर मुझसे सटकर खड़ा हो गया, अपना प्यार जताने को। डॉक्टर साहब भी उसकी पीठ थपथपा रहे थे।

''मेरे योग्य कोई और सेवा?'' मैंने बैल से पूछा।

बैल की आँखों में प्यार और शैतानी की चमक थी। उसने कहा, ''आप कहानियाँ लिखते हो न?''

''ज़रूर लिखता हूँ।'' मैंने कहा।

''तो एक कहानी मुझ पर नहीं लिखोगे?'' वह बोला।

''जरूर लिखूँगा!'' मैंने कहा, और फिर हम तीनों हँस पड़े। डॉक्टर, मैं और बैल। फिर बैल जंगल की ओर मुड़ गया। डॉक्टर दूसरे जानवरों को देखने लगा और मैं शहर की ओर चल पड़ा।

घर आकर मैंने उस बैल पर अवश्य एक कहानी लिखी थी। यही, जिसे आप पढ़ रहे हैं।

सभी चित्र ● कैलाश दुबे

माथापच्ची

1

कुछ वर्ग यहाँ छुपा-छुपाई के खेल में मशगूल हैं। ज़रा गिनो तो कितने खिलाड़ी, यानी वर्ग हैं?

2

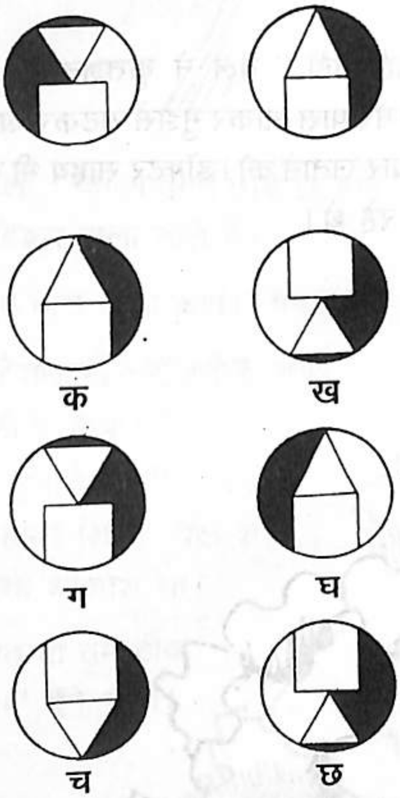

ऊपर के चित्र में बने सबसे ऊपर के दो गोलों को देखो। नीचे के छह गोले भी इनके जैसे ही बनाने की कोशिश की गई है। लेकिन कुछ जगह चूक हुई है। यानी कुछ गोले ऊपर वाले दो गोलों से मेल नहीं खाते हैं। बस तुम्हें ऐसे ही गोले ढूँढना है।

3

एक बाग के माली को माथापच्ची का चस्का क्या लगा अब वो उसी को बाग में जाने देता है जो उसके सवाल का सही जवाब दे।

एक बार उर्मिला, असीम और नफीस बाग देखने गए। देखा माली बच्चों से कुछ बातें कर रहे हैं। माली ने कहा 'छह दो नौ'। बच्चे बोले 'दो एक एक'। माली ने फिर पूछा 'आठ एक दो'? बच्चों ने कुछ सोचा और बोले 'दो एक एक'। माली फिर बोला 'सात दस तीन'। बच्चे सुराख जान गए थे। झट-से बोले 'दो दो दो'!

माली ने देखा सब ध्यान से सुन रहे हैं तो उसने असीम, उर्मिला और नफीस से पूछा 'एक तीन दो'। उर्मिला ने झट-से उत्तर दिया। **क्या सुराग तुम्हारे हाथ लगा?**

4

साबुन पानी से बुलबुले तो तुमने भी उड़ाए ही होंगे। यहाँ कुछ बुलबुले एक दूसरे से जुड़े हैं। इन्हीं बुलबुलों में से एक रास्ता ऊपर तीर की तरफ जाता है। रास्ता ज़रा सँभलकर ढूँढना, कोई बुलबुला फूट न जाए।

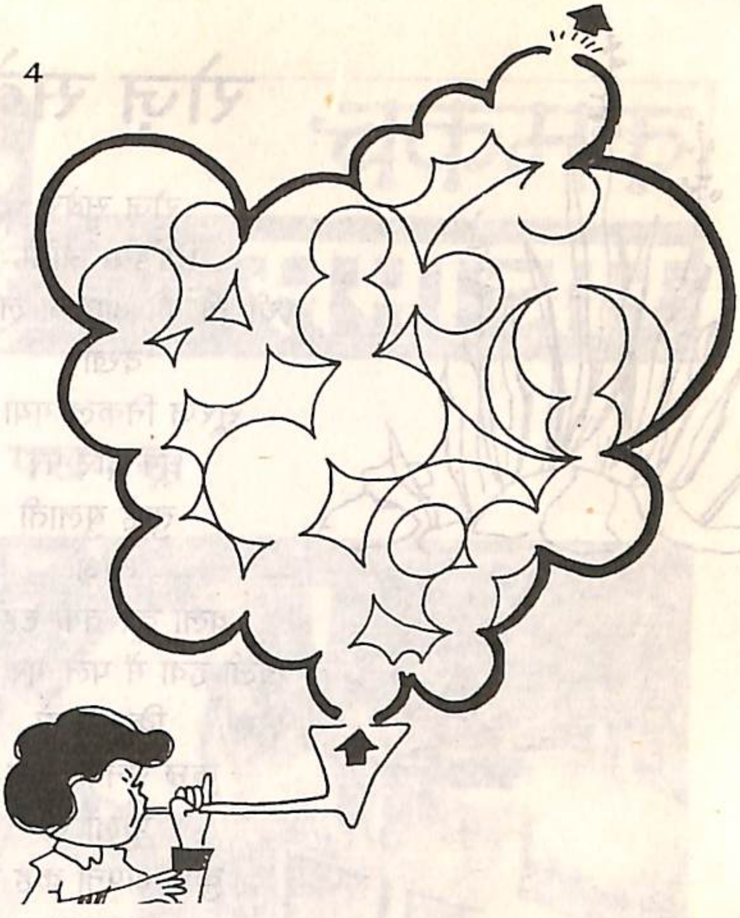

5

अतीत, जलील, शरीर, लज़ीज़......... ढेरों शब्द होंगे ऐसे! इनकी खासियत यह है कि एक तो ये सभी तीन अक्षरों से बने हैं। दूसरे इनका दूसरा अक्षर वही है जो इनका आखिरी अक्षर है। अब अतीत को ही ले लो ! इसका दूसरा और तीसरा अक्षर **अ** है।

क्या तुम महज़ पाँच मिनट में ऐसे पाँच और शब्द ढूँढ सकते हो?

6

अच्छा बताओ अगर एक अण्डा तीन मिनट में उबल जाता है तो छह अण्डे उबालने में कितना वक्त लगेगा?

7

सरसरी निगाह से देखोगे तो लगेगा कि ये एक ही दृश्य की दो तस्वीरें हैं! पर ज़रा गौर करोगे तो कुछ फर्क दिख ही जाएँगे। चलो ज़रा गिनो तो कितने फर्क हैं इन दोनों में?

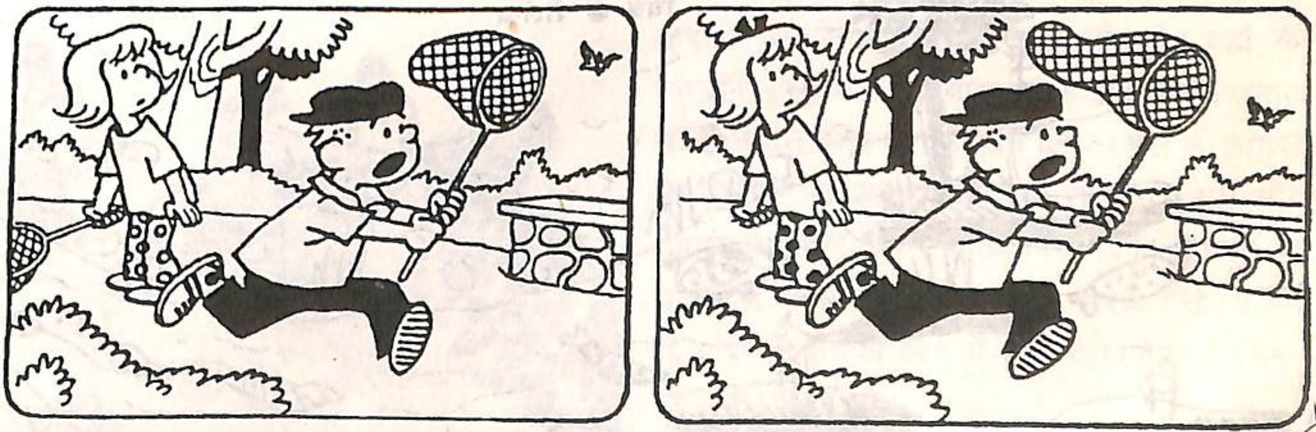

रोज़ सबेरे

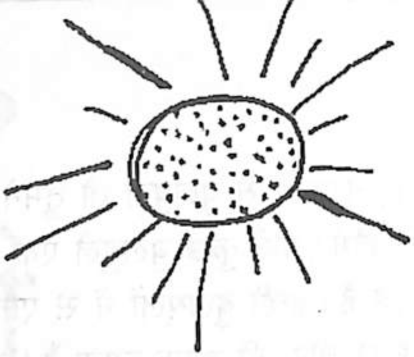

रोज़ सबेरे
चिड़िया आती
चीं-चीं की आवाज़ लगाती
देखो,
सूरज निकल गया है
धूप द्वार पर
तुम्हें बुलाती
आओ
चलो दूर तक टहलें
खुली हवा में पल भर रह लें
किरणों से
कुछ उनका सुन लें
फूलों से
कुछ अपना कह लें
सचमुच
लगता बड़ा सुहाना
सुबह
नदी का शान्त मुहाना
जो
उठ जाता सबसे पहले
उसने ही
इसका सुख जाना

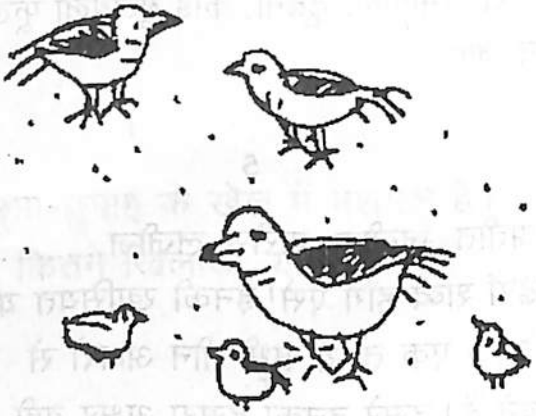

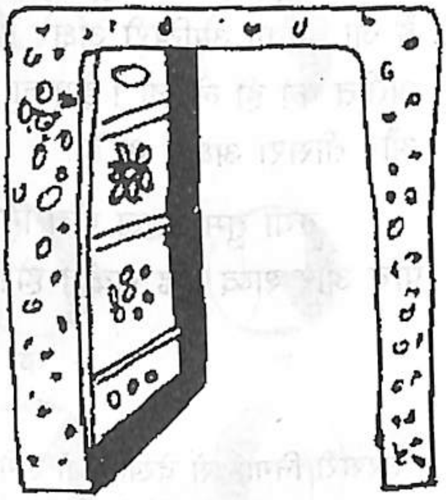

● डॉ. मधुसूदन साहा

चित्र ● शैलेन्द्र

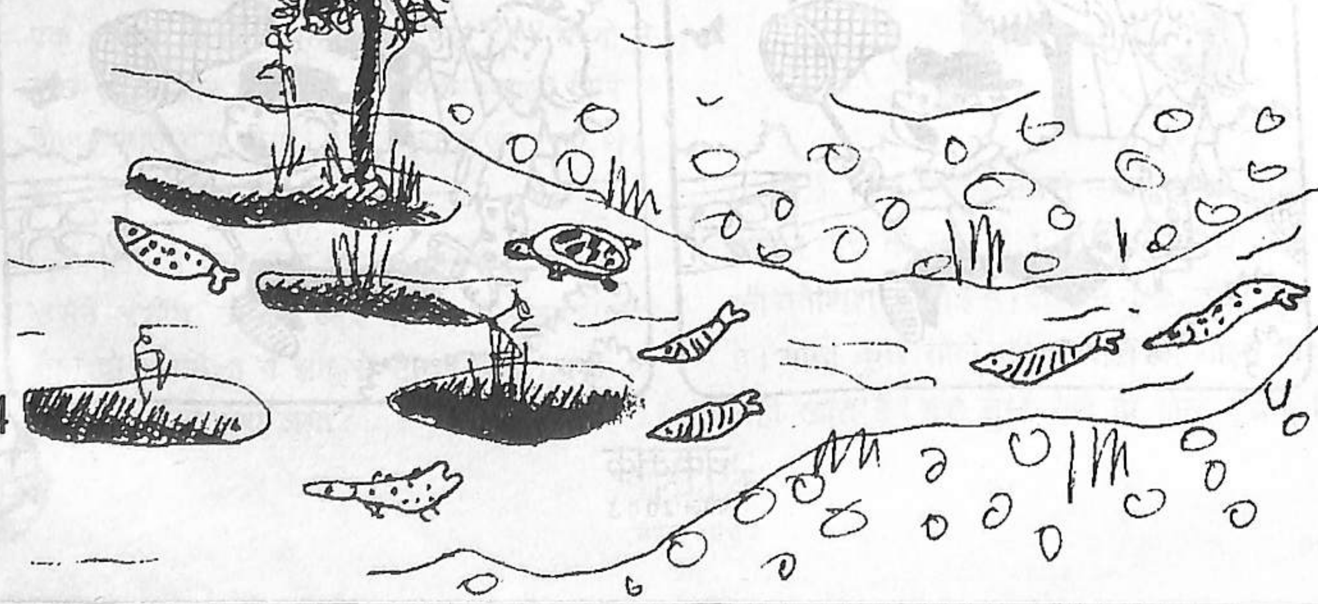

चकमक समाचार

विज्ञान पखवाड़ा

उज्जैन में पिछले माह राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर विज्ञान पखवाड़ा आयोजित हुआ। शहर के विभिन्न स्कूलों के तकरीबन बारह सौ बच्चों ने इस आयोजन का लुत्फ उठाया।

बारह दिन चले इस पखवाड़े में सस्ते और सरल उपकरणों के ज़रिए बच्चों को विज्ञान के करीब लाने की कोशिश की गई। इसके अलावा शरीर के आंतरिक अंगों के चार्ट बच्चों ने बनाए। आहार चकती से बच्चों ने पता किया कि कौन-सी चीज खाने से उन्हें कितनी कैलोरी ऊर्जा मिलती है। विभिन्न जीवन चक्रों और भोजन चक्रों को दर्शाने वाले कागज़ के खिलौने उर्फ घुमक्कड़ भी बच्चों ने बनाए। सवालीराम और माथापच्ची जैसी रोचक गतिविधियाँ भी इस मेले में हुईं। दीवार अखबार बनाने के हुनर पर भी बच्चों ने काम किया। तुम शायद जानते होगे 28 फरवरी मशहूर वैज्ञानिक सी.वी. रामन की याद में विज्ञान दिवस के नाम से मनाया जाता है। क्या तुम्हारे स्कूल में ऐसे मेले होते हैं?

करोहन बाल मेला

करोहन उज्जैन ज़िले का एक गाँव है। यहाँ के माध्यमिक स्कूल में एक बालमेला हुआ। अंदाज़न साठ बच्चों ने इस बाल मेले में भाग लिया। मेले में कागज़ के खिलौनों के अलावा बच्चों ने शरीर के अंग और दीवार अखबार जैसी गतिविधियाँ कीं। विज्ञान के प्रयोगों में बच्चों ने कई प्रयोग खुद करके देखे। प्रयोग के परिणाम उनको हैरत में डाल देते। वे उन्हें फिर-फिर करके देखते।

रिपोर्ट : दुर्गेश, उज्जैन, म.प्र.

खिरकिया में बालमेला

शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक शाला खिरकिया में पिछले महीने एक बालमेला हुआ। इस मेले में 200 से ज़्यादा बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत विज्ञान के कुछ सरल प्रयोगों से हुई जो पहली नज़र में चमत्कार से लगते हैं। इस कड़ी में आगे तराजू के सिद्धांत से सम्बंधित कुछ प्रयोग किए गए। मसलन तराजू का संतुलित रहना तराजू के ठीक होने की शर्त नहीं है। हवा के दबाव, द्रवों के सामान्य व्यवहार को समझने के लिए भी कई प्रयोग बच्चों ने किए।

इस मेले में कुल मिलाकर तीन तरह की गतिविधियाँ की गईं। एक में विज्ञान के उपकरण और अन्य सामग्री रखी थी। दूसरे में पोषण पर आधारित पोस्टर चार्ट आदि रखे थे। यहाँ पोषण से जुड़ी कई गतिविधियाँ भी की जा रही थीं। तीसरी गतिविधि में हाथ की सफाई के कुछ मज़ेदार करिश्मे दिखा रहे थे। हाथ की सफाई वाली गतिविधि में सिक्के गलाना, सिक्का गायब करना आदि मनोरंजक खेलों के चलते यहाँ पर खूब भीड़ रही।

रिपोर्ट : योगेश मालवीय, खिरकिया, म.प्र.

मोरगढ़ी में बालमेला

मोरगढ़ी म.प्र. के हरदा ज़िले का एक छोटा-सा कस्बा है। पिछले महीने यहाँ के प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल में एक बालमेला हुआ। इस बालमेले में पाँच गतिविधि केन्द्र थे। एक जगह साँपों की दुनिया और पोषण पर पोस्टर प्रदर्शित किए गए थे। इस केन्द्र पर इन पोस्टरों पर चर्चा भी हो रही थी। एक और स्टॉल पर बच्चे चित्र बना रहे थे। बच्चों ने आदिवासी संस्कृति के विभिन्न रंग उकेरे।

कागज़ के खिलौनों की गतिविधि उर्फ ऑरीगेमी में टोपी, नाव जैसी कई चीज़ें बनाना सीखीं। हाथ की सफाई यहाँ भी मनोरंजन का केन्द्र रही। इसमें बटुए से नली निकालना, जादुई आग और ताश के कुछ खेल बच्चों को खूब पसन्द आए। आठवीं के बच्चों ने भोजन में पोषक तत्वों मसलन वसा, प्रोटीन का परीक्षण भी किया।

इस बाल मेले में एक बड़ी चुलबुली गतिविधि थी मोनोएक्टिंग। इसमें हर बच्चे को एक पर्ची उठानी पड़ती थी। उस पर जो लिखा होता था उठाने वाले को उसकी नकल करनी पड़ती थी। बच्चों ने आटा गूँथने, बौनी करने और चोटी करने जैसी नकलें कीं।

रिपोर्ट : योगेश मालवीय, खिरकिया, हरदा, म.प्र.

खेल समाचार

फुटबॉल

फुटबॉल में ज़िनेडिन ज़िडाने के मायने क्रिकेट के तेंदुलकर से ज़्यादा हैं। उनके पास बॉल आते ही रोमांच हदें पार करने लगता है। एक बार फिर से उन्हें फ्रांसीसी फुटबॉल का कप्तान चुना गया है, ताकि फ्रांस के सुनहरे दिन लौटें।

क्रिकेट

सात हफ्ते तक छाए रहने के बाद क्रिकेट का आठवाँ मेला पूरा हो गया। 54 में से सात-आठ मैच ही रोमांचक रहे। इसके बावजूद हर मैच की अपनी कहानी है। केन्याई नौसीखियों ने कुछ ज़ोरदार टीमों को पटखनी दी। मेज़बान दक्षिण अफ्रीकी टीम पहले ही दौर में ढेर हो गई। बारिश ने भी कुछ मैचों के परिणामों पर असर डाला। खैर!

आस्ट्रेलियाई आखिर तक जीतते रहे। फायनल भी काफी सारे और मैचों की तरह एक-तरफा हो गया। पहले बल्लेबाज़ी करते हुए ऑस्ट्रेलियाइयों ने रनों का पहाड़ खड़ा कर दिया। भारतीय उनचालीस ओवर तक ही हार को टाल सके। जिस बल्लेबाज़ी के दम पर ऑस्ट्रेलिया ने यह कप जीता उसी बल्लेबाज़ी के शहंशाह बने हमारे खिलाड़ी सचिन! इतना ही नहीं इस फेहरिश्त में दूसरे स्थान पर भी हमारी टीम के कप्तान रहे। श्रीलंकाई चामिण्डा वास ने सबसे ज़्यादा 23 बल्लेबाज़ों को पेवेलियन भेजा। एडम गिलक्रिस्ट, हर्शल गिब्स, सचिन, राहुल, मारवन, स्टीफन फ्लेमिंग ने बल्ले से कमाल किया तो ब्रेट ली, अकरम, वास और शॉन बॉण्ड ने गेंदों से वाहवाही लूटी। अगला यानी नवाँ क्रिकेट मेला सन् 2007 में वेस्ट इण्डीज़ में लगेगा।

हॉकी

जर्मनी को शून्य के मुकाबले एक से हराकर पाकिस्तान ने अजलान शाह हॉकी टूर्नामेण्ट जीत लिया है। मलेशिया के ईपोह शहर में हुए इस फायनल में पाकिस्तान के साबिर हुसैन ने एकमात्र गोल दागा।

टेनिस

सेरेना विलियम्स ने हमवतन जेनिफर को हराकर नास्डैक –100 ओपन का एकल खिताब जीत लिया। उधर आन्द्रे अगासी ने इसी प्रतियोगिता में कार्लोस मोया को हराकर छठवाँ एकल खिताब जीत लिया है।

दो पहेलियाँ

(1)

कक्षा सात की
आठ लड़कियाँ
सब थीं नटखट चाल की

तेरह की थीं
पाँच लड़कियाँ
दो थीं ग्यारह साल की

शेष बची एक
नौ साल की
रेशम जैसे बाल की

इन आठों की
औसत वय
बतलाओ इस साल की

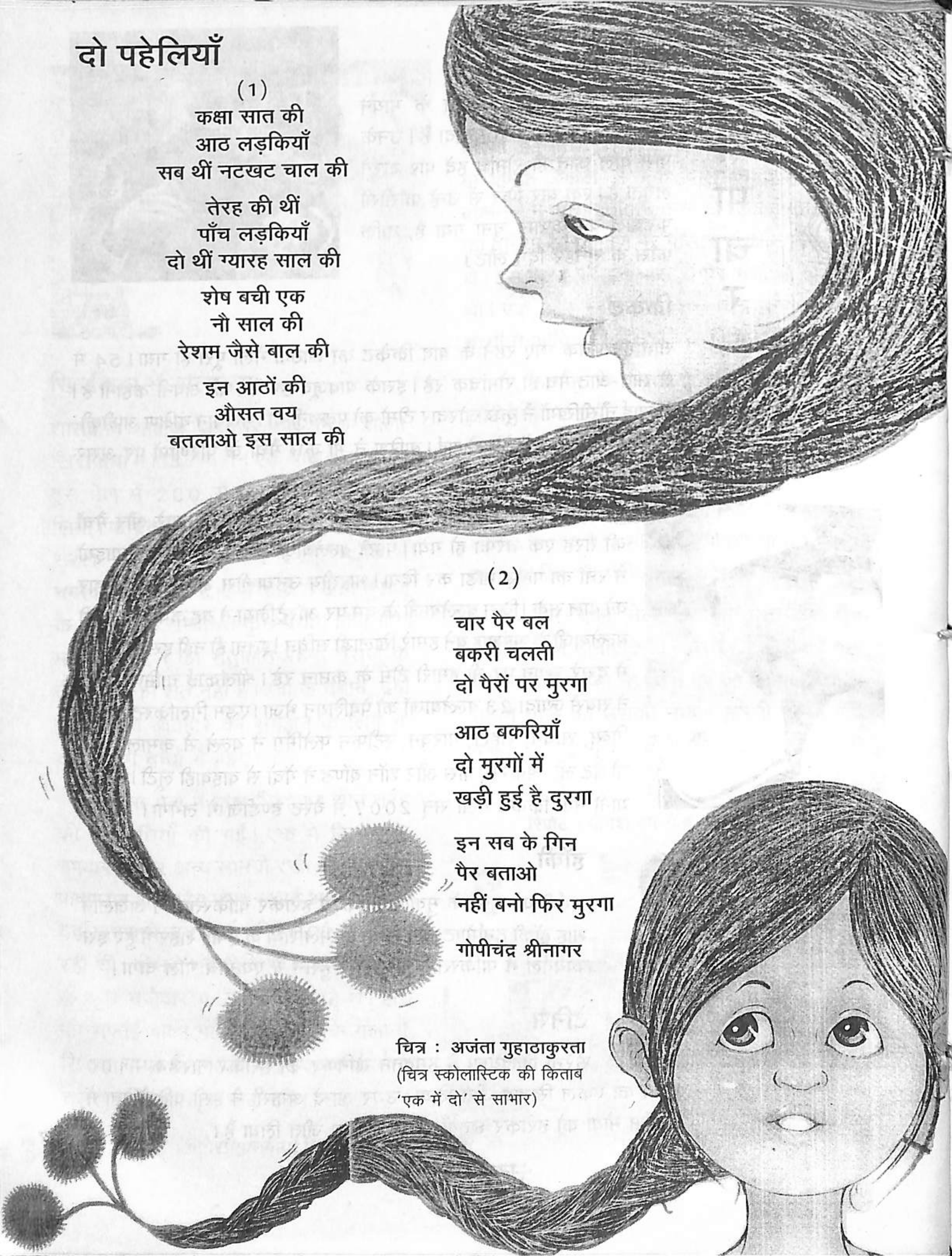

(2)

चार पैर बल
बकरी चलती
दो पैरों पर मुरगा

आठ बकरियाँ
दो मुरगों में
खड़ी हुई है दुरगा

इन सब के गिन
पैर बताओ
नहीं बनो फिर मुरगा

गोपीचंद्र श्रीनागर

चित्र : अजंता गुहाठाकुरता
(चित्र स्कोलास्टिक की किताब
'एक में दो' से साभार)

अण्डा खाने वाला साँप

के. आर. शर्मा

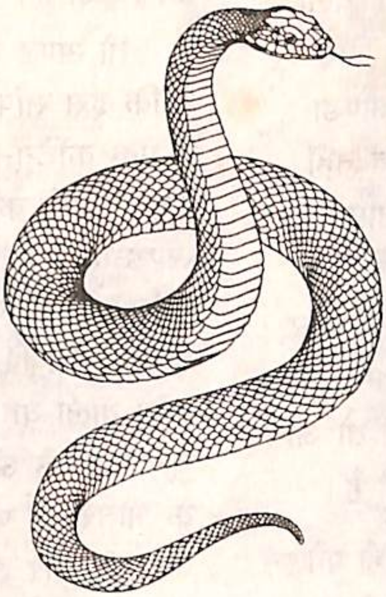

तुमने साँपों के बारे में काफी कुछ सुन रखा होगा। मसलन साँप दूध पीते हैं ..... उनकी दाढ़ी-मूँछें होती हैं। ये सब तो गप्पबाज़ी है। किन्तु तुमको एक ऐसे साँप के बारे में बताते हैं जो अण्डों को अपना आहार बनाता है। तुम कहोगे कि इसमें क्या खास बात है, क्योंकि जब साँप ज़िन्दा जीवों को निगल जाते हैं, तो अण्डा क्या चीज़ हुई! और यह भी सही बात है कि सपेरे अपने पास जो साँप रखते हैं, उनको भूख लगने पर अण्डा फोड़कर पिलाते हैं। और एक चीज़ यह कि शायद तुमने धामन साँप को कई बार पक्षियों के घोंसले में अण्डा फोड़कर खाते देखा हो। पर जिस साँप की चर्चा हम यहाँ करने जा रहे हैं अण्डा खाने का उसका तरीका बेहद ही दिलचस्प है। इसके चित्र देखकर तो तुम भी दाँतों तले उँगली दबा लोगे। इस साँप का नाम ही पड़ गया है... अण्डा खाने वाला साँप!

अण्डा खाने वाला साँप अण्डे को खाने से पहले बाहर नहीं फोड़ता, जैसा कि धामन या कोई और साँप कभी-कभार करते हैं। क्यों? हाँ, ठीक समझा तुमने। बाहर फोड़कर खाने के चक्कर में काफी सारा तरल पदार्थ तो बह ही जाएगा। यह साँप तो पूरे अण्डे को खोल या छिलका समेत ही निगल जाता है। चलो देखते हैं कि इसके पास इस अण्डे को निगलने के लिए क्या व्यवस्था है और किस प्रकार यह साँप अण्डे को खाता है।

सभी साँपों के मुँह की एक खूबी यह होती है कि ये अपने से मोटे शरीर वाले जीवों को भी निगल जाते हैं। एक और बात, सारे साँप अपने शिकार को चबाते नहीं हैं, बल्कि साबुत निगल जाते हैं। इनके दाँत शिकार को भीतर पहुँचाने में मदद करते हैं और शिकार को बाहर नहीं निकलने देते हैं।

अण्डा खाने वाला साँप भी अपने मुँह को काफी चौड़ा कर सकता है। इसके मुँह में दाँत काफी छोटे होते हैं। सोचो क्यों? यदि दाँत बड़े होते तो मुँह में अण्डे के फूटने की गुंजाइश जो बनी रहती! इसके मुँह की तुलना साइकिल के रबर ट्यूब से की जा सकती है। जैसे रबर ट्यूब में उसकी मोटाई से ज़्यादा बड़ी चीज़ घुसाई जाने पर रबर फैलता जाता है। उसी प्रकार से जब यह साँप अण्डे को निगलता है तो इसका मुँह चौड़ा होता जाता है। हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि इसके दाँत काफी छोटे होते हैं जो कि अण्डे को निगलते समय उसको फोड़ नहीं पाते हैं।

इस साँप के लिए भोजन पाने में सबसे पहला कदम होता है अण्डे को मुँह में लेना। अण्डे को निगलते समय मुँह साथ ही साथ चौड़ा होता जाता है। और इस प्रकार से आहिस्ता-आहिस्ता अण्डा मुँह के भीतर चला जाता है। हालाँकि यह प्रक्रिया साँप के लिए काफी मेहनत भरी होती है। अब जब अण्डा मुँह में चला गया तो इसका यह मतलब नहीं कि यह खुद-ब-खुद ही पेट में चला जाएगा। सामने के पन्ने पर तुम्हें चित्र में दिखाई देगा कि अण्डा साँप के मुँह के भीतर बन्द है और मुँह का आकार खरबूजे के माफिक लगने लगा है। जब साँप ने अण्डा निगल लिया हो तो आगे की कहानी और भी दिलचस्प हो जाती है।

अब ज़रूरत है अण्डे को मुँह में ही फोड़ने की ताकि उसके भीतर का तरल पदार्थ भोजन के रूप में पेट में जा सके। अण्डे को फोड़ने के लिए भी इस साँप के मुँह में एक उम्दा व्यवस्था है। तुम जानते ही होगे कि साँप भी एक कशेरुकी जीव है। यानी जैसे हमारे शरीर के ढाँचे को सम्हालने के लिए एक रीढ़ की हड्डी होती है, वैसे ही साँप के पास भी रीढ़ की हड्डी है।

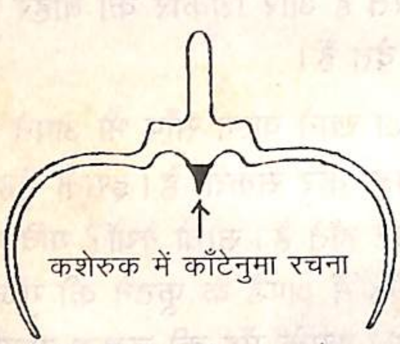

साँप की रीढ़ की एक कशेरुक

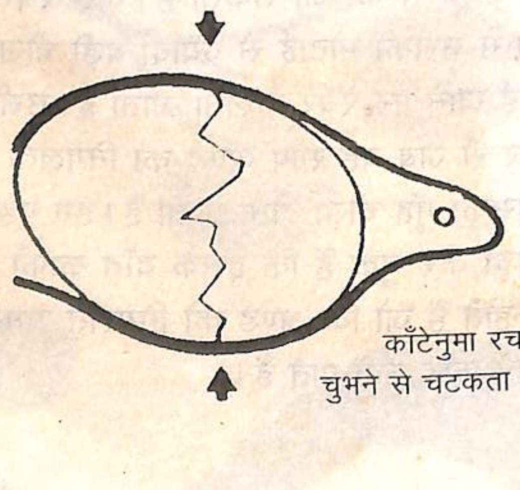
काँटेनुमा रचना के चुभने से चटकता अण्डा

तो अण्डे को फोड़ने के लिए इंतज़ाम यह है कि इस साँप की रीढ़ की अगली कशेरुकों में एक काँटेनुमा रचना होती है। यही काँटेनुमा रचना अण्डे को फोड़ने का काम करती है। अण्डे को निगल लेने के बाद यह साँप अपनी गर्दन की माँसपेशियों की मदद से अण्डे को दबाता और फिर पीछे की ओर धकाता है। तब काँटे वाली यह कशेरुका अण्डे के खोल में चुभ जाती है और अण्डा फूट जाता है। अण्डे के भीतर का पोषक पदार्थ साँप के पेट में चला जाता है और अण्डे का टूटा हुआ खोल साँप उलटी करने की तरह उगल देता है। है न मज़ेदार माजरा! इस साँप को एक अण्डा निगलने में कोई 20 से 30 मिनट का समय लगता है।

चलते-चलते यह भी जान लें कि दुनिया में इस साँप की कोई 6 प्रजातियाँ हैं। इनमें से पाँच अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान में पाई जाती हैं। एक किस्म का अण्डा खाने वाला साँप हमारे यहाँ पर भी पाया जाता है पर यह काफी दुर्लभ है। यह प्रजाति उत्तर भारत के जंगलों में पाई जाती है। दरअसल हमारे यहाँ पाया जाने वाला यह साँप कुछ इस प्रकार के स्वभाव का है कि इसको कभी अण्डा न मिले तो यह किसी दूसरे जीव का भी शिकार कर लेता है। पर अफ्रीका में पाए जाने वाले इस तरह के साँपों को अगर अण्डा न मिले तो ये भूखे मर जाएँ।

सभी चित्र एवं फोटो एन्सायक्लोपीडिया ऑफ एनिमल वर्ल्ड से साभार

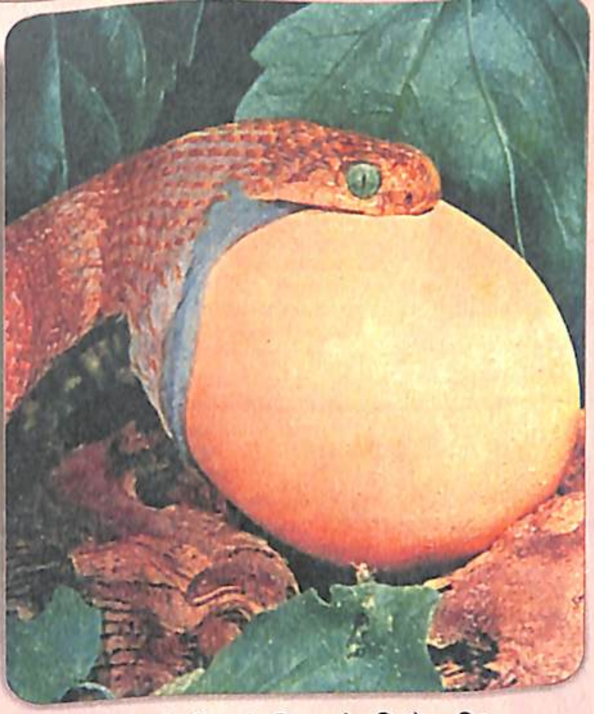

अण्डा मिलते ही उसे निगलने की तैयारी!
इसके लिए पहला काम है मुँह फाड़कर समूचे
अण्डे पर पकड़ बनाने की।

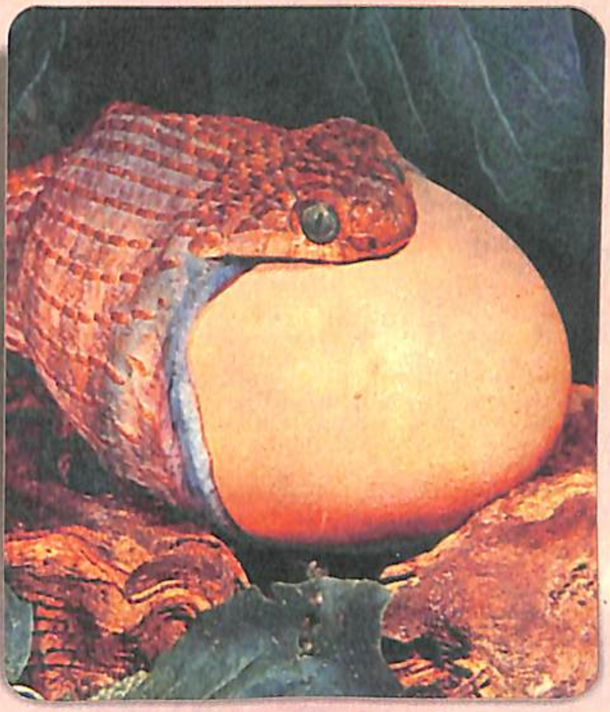

धीरे-धीरे अपने छोटे-छोटे दाँतों और मज़बूत
माँसपेशियों की मदद से इस साँप ने अण्डा
निगलने का आधा काम तो कर लिया है।

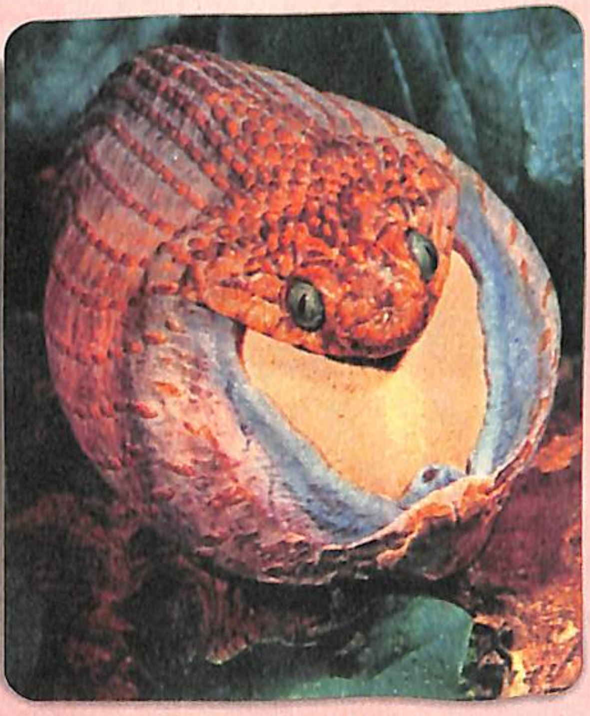

बस काम पूरा हुआ ही समझो!

और गड़प...!
यह कोई खरबूज नहीं,
अण्डा मुँह में ठूँसा हुआ साँप है।

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003

ड्रेगोमिर लॉरेनशियु, 12 वर्ष, रोमानिया

[illegible] की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना